अध्याय : ४

अनुसंधान से संबंधित सामग्री का विश्लेषण एवं अर्थान्वयन :-

४.१ प्रस्तावना।

४.२ अनुसंधान कार्य से संबंधित संपादित सामग्री की सामान्य जानकारी।

४.३ हिंदी अध्यापन विधि का अध्ययन करनेवाले छात्रशिक्षकों की प्रश्नावलियों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.३.१ सैद्धांतिक विभाग से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.३.२ प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.४ अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी अध्यापकों से साक्षात्कार एवं भेंटवार्ता की प्रश्नसूची का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.४.१ सैद्धांतिक विभाग से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.४.२ प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.५ माध्यमिक हिंदी अध्यापक के लिए प्रश्नावलियों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन।

४.६ समारोप।

४.१ प्रस्तावना :-

पीछले प्रकरण ३ के अंतर्गत अनुसंधान कार्य पद्धति, साधन इन साधनों द्वारा संपादित सामग्री का विश्लेषण कैसे किया गया है, इनके बारें में जानकारी प्राप्त की है। साथ ही अनुसंधान कार्य का क्षेत्र क्या है, न्यादर्श क्या है, इसके बारें में भी जानकारी प्राप्त की है।

प्रस्तुत प्रकरणमें अनुसंधान के साधनों द्वारा संपादित सामग्री का वर्णन , वर्गीकरण, विश्लेषण एवं अर्थान्वयन करने का प्रयास किया गया है। अनुसंधान कार्य में संपादित सामग्री द्वारा हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक पक्ष की उपयुक्तता, निर्धारित उद्देश्यों को सफल बनाने में पाठ्यक्रम कितना उपयुक्त, पर्याप्त है, सफल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम का क्या योगदान है, पाठ्यक्रम की कार्यनीति का कार्यान्वितिकरण द्वारा कितने हद तक उद्देश्य सफल होते है, आदि के बारें मे विविधांगी चर्चा होना आवश्यक था। अत: उस का विवेचन निम्नांकित परिच्छेदों मे की गई है।

४.२ अनुसंधान कार्य से संबंधित संपादित सामग्री की सामान्य जानकारी :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए सामग्री प्राप्त करने हेतु कुल तीन अनुसंधान साधनों की रचना की थी। इन तीन साधनों द्वारा सामग्री की प्राप्ति की गयी है, इसकी चर्चा निम्नांकित है -

१] हिंदी अध्यापन विधि के छात्र शिक्षक के लिए प्रश्नावली :-

यह प्रश्नावली दो विभागों में विभाजित थी। विभाग "अ" में

११ प्रश्न थे, तथा विभाग "ब" में ११ प्रश्न थे। कुल २२ प्रश्न इसमें थे। कई प्रश्न बद्ध तो कई मुक्त स्वरूप के थे। इस प्रश्नावली के प्रथम पृष्ठ पर छात्र - शिक्षकों के लिए प्रश्नावली की पूर्ति करने हेतु सूचनाएँ दी थी। तथा साथ ही मद्दे क्र. I से में छात्रशिक्षकों की सामान्य जानकारी प्राप्त की गई है। कुल ८४ छात्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त प्रश्नावली से छात्रशिक्षकों की सामान्य जानकारी सहित एक सूची बनाई गई है, जो परिशिष्ठ "अ" में दी है। [देखिए - परिशिष्ठ "अ"]

प्रस्तुत प्रश्नावली का वर्णन, विश्लेषण एवं अर्थान्वयन तथा टीकात्मक परीक्षण भी किया गया है।

२] अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी अध्यापकों के लिए साक्षात्कार प्रश्नसूची -

प्रस्तुत प्रश्नसूची में कुल १४ प्रश्न थे। यह प्रश्न सूची दो विभागों में विभाजित थी। पहले भाग में सैद्धांतिक पाठ्यक्रम पर तो दूसरे भाग में प्रात्यक्षिक कार्य से संबंधित प्रश्न रखे थे। इसका प्रथम पृष्ठ अध्यापकों को सूचनाएँ देने हेतु एवं उनकी सामान्य जानकारी प्राप्त करने हेतु बनाया था। प्रथम पृष्ठ में मद्दे T से तक में अध्यापकों ने अपनी सामान्य जानकारी दी है। कुल दस अध्यापक महाविद्यालय के दस अध्यापकों द्वारा प्रस्तुत प्रश्न सूची को साक्षात्कार के दरम्यान संपन्न किया है। इसकी सूची परिशिष्ठ "ब" में दी है। [देखिए परिशिष्ठ "ब"]

इस प्रश्न सूची द्वारा संपन्न सामग्री का वर्णन, विश्लेषण, अर्थान्वयन एवं टीकात्मक परिक्षण भी किया गया है।

३] माध्यमिक पाठशाला के हिंदी अध्यापक के लिए प्रश्नावली :-

इस प्रश्नावली में कुल १४ प्रश्न थे, जिस में कुछ बद्ध स्वरूप के तो कुछ मुक्त स्वरूप के थे। प्रस्तुत प्रश्नावली का पहला पृष्ठ अध्यापकों प्रश्नावली की पूर्ति करने के सूचना देने के लिए एवं सामान्य जानकारी पाने हेतु तैयार किया था। यह प्रश्नावली सिर्फ आठ अध्यापकों ने भर दी है। उनकी सामान्य जानकारी की सूची तैयार की है। जो परिशिष्ठ " क " में दी है। [देखिए - परिशिष्ठ " क "]

प्रस्तुत प्रश्नावली का वर्णन, विश्लेषण एवं अर्थान्वियन तथा टीकात्मक परिक्षण आगे किया है।

उपर्युक्त तीनों प्रश्नावलियों का अनुक्रम से वर्णन, विश्लेषण एवं अर्थान्वियन निम्न परिच्छेदों में किया है।

उपर्युक्त तीनों प्रश्नावलियों का अनुक्रम से वर्णन, विश्लेषण एवं अर्थान्वयन निम्न परिच्छेदों मे किया है।

४.३ हिंदी अध्यापन विधि का अध्ययन करनेवाले छात्रशिक्षकों की प्रश्नावलियों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

प्रस्तुत प्रश्नावली के माध्यम से अनुसंधान के लिए सामग्री संपादन करने का प्रयास किया गया है। कुल ग्यारह अध्यापक महाविद्यालयों के एक सौ दस में से चौरासी छात्राध्यापकों ने प्रश्नावली की पूर्ति संपूर्ण रूप से की है। उनका समावेश ही अर्थान्वयन के आधार के लिए किया है।

प्रस्तुत प्रश्नावली के प्रश्नों को प्राप्त हुए प्रतिसादों का विश्लेषण, अन्वयार्थ व सटिक परीक्षण निम्नांकित परिच्छेदों में किया है।

४.३.१ सैद्धांतिक विभाग से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

" छात्रशिक्षक के लिए प्रश्नावली " के विभाग "अ" में प्रश्न क्र.१ :- " प्रचलित हिंदी अध्यापन विधि का पाठ्यक्रम सफल अध्यापक बननें में कितने हद तक उपयुक्त है ?" इस प्रश्न का उद्देश्य था कि, हिंदी अध्यापन विधि का सैद्धांतिक पाठ्यक्रम सफल अध्यापक बनने में कितना उपयुक्त है, यह जानना। यह बद्ध प्रश्न था इसे पाँच पर्याय दिये गये थे। -

१] अत्याधिक उपयुक्त।

२] उपयुक्त।

३] यथा तथा ।

४] अल्प स्वरूप ।

५] अत्यल्प स्वरूप ।

इन्ही में से किसी एक पर्याय से सहमत होने से उस पर छात्रशिक्षक को [ ] यह चिन्ह अंकित करना था। छात्रशिक्षकों द्वारा पर्यायों को दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

सारणी क्र. IV . १

हिंदी अध्यापन विधि के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की उपयुक्तता।

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्याधिक उपयुक्त	२०	२३.८० %
२.	उपयुक्त	४२	५०.०० %
३.	यथा तथा	१८	२१.४४ %
४.	अल्प स्वरूप	४	४.७६ %
५.	अत्यल्प स्वरूप	-	-

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, अत्याधिक उपयुक्त के पक्ष में २३.८० % प्रतिशत प्रतिसाद है। " उपर्युक्त " के पक्ष में प्राप्त प्रतिसाद ५०.०० % प्रतिशत है। " यथा तथा " के पक्ष में २१.४४ % प्रतिशत प्रतिसाद है।

"अल्प स्वरूप" के मत में सिर्फ ४.७६ % प्रतिशत प्रतिसाद है।

इस सारणी द्वारा यह यकीनन् कहा जा सकता है कि, पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के पक्ष में ७३.८० % प्रतिशत अर्थात ज्यादह से ज्यादा प्रतिसाद मिला है, जिससे पाठ्यक्रम की उपयुक्तता निहायत है।

पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के " यथा तथा " के पक्ष में तथा " अल्प स्वरूप" के पक्ष में मत देनेवाले छात्राध्यापकों के लिए, उनके स्व मतों का प्रकटीकरण करने हेतु आग्र प्रश्न क्र. २, तथा २.१ की रचना की है। इन प्रश्नों द्वारा उनके मतों को व्यक्त करने का अवसर दिया है। इनमें से " अल्प स्वरूप " के पक्ष में प्राप्त मत १०.०० % प्रतिशत से भी कम होने से खास निर्देशनीय नही है, न महत्व देने योग्य है।

प्रश्न क्रं.२ : " अगर आप के मत मे प्रचलित पाठ्यक्रम अनुपयुक्त है, तो नीचे अनुपयुक्तता के पक्ष में कई कारण दिये गये है, उनमें से आप जिन कारणों से सहमत हो, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए" यह प्रश्न बंद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य छात्रशिक्षकों से पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के संबंध में कारणों की जाँच करना तथा अनुपयुक्तता कारण ढूँढने में मानसिक तौर पर दिशा प्रदान करना था। साथ साथ इस पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक व नकारात्मक अभिवृत्ति की जाँच करना था। छात्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दियक है -

सारणी क्र. IV. २

अ.नं.	विधान	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में हम सीखते है, वह भविष्य में प्रत्यक्ष अध्यापन में पूर्ण स्वरुप काम में नही ला सकते।	१९	२२.६१
२.	समय अभाव होने से न सब घटकों का अध्ययन होता है।	१७	२०.२३
३.	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का सहसंबंध प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य से कैसे जोडा जाता है, इसके बारे में कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता।	१४	१६.६६
४.	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का अध्ययन सिर्फ परीक्षा में अच्छे अंक की प्राप्ति के लिए किया जाता है।	१३	१५.४७
५.	पाठ्यक्रम बहुतही ज्यादा है, अतः इसे कम किया जाये।	१५	१७.८५
६.	सफल अध्यापक होना स्वयं के गुणों पर निर्धारित करता है, अत: पाठ्यक्रम का स्थान ज्यादा महत्वपूर्ण नही है।	१५	१७.८५

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, विधान क्र. १ को २२.६१ % प्रतिशत, विधान क्र.२ को २०.२३ % प्रतिशत, क्र.३ को १६.६६ % प्रतिशत, क्र.४ को १५.४ % प्रतिशत, क्र. ५ को १७.८५ % प्रतिशत तथा विधान क्र. ६ को १७.८५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है।

विधान क्र. १ को सबसे ज्यादा प्रतिसाद मिला है। प्रशिक्षण काल में अध्ययन किया हुआ ज्ञान भविष्यकाल में पूर्ण रूप में काम में नहीं लाने के कई कारण हो सकते है। जैसे की पाठशाला का वातावरण, गाँव की परिस्थिति, पाठशाला की संस्कृति, सह अध्यापकों की वृति, विद्यार्थियों की क्षमताएँ, आदि। इस विधान से सहमती दर्शानेवाले छात्रशिक्षकों ने स्वयं इसका अनुभव किया हो। दूसरे पहलू से यह एक पूर्वधारणा भी है, जिसमें नाकारावृति का एक बिम्ब है। अत: पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, अध्यापक व्यवसाय में उसका योगदान के बारें में छात्रशिक्षकों को योग्य मार्गदर्शन करें यह अध्यापकों की जिम्मेदारी बनती है।

विधान क्र. २ को प्रतिसाद देनेवालों के मत से समय अभाव का दोष प्रकट करते हुए सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के घटकों के अध्यापन से वंचित रहना पडता है, इस बात पे गौर किया है। समय की उपर्याप्तता की वजह तो सभी को मालूम है। दर असल बी.एड. का प्रशिक्षण कालावधि १८० दिन का होता है, जो कम है, यू.जी.सी.द्वारा घोषित २२१ दिनों का यह प्रशिक्षण है। किन्तु तांत्रिक दिक्कतों की वजह से आज तक इसका अंमल न हो पाया है। इससे एक बात पर गौर करें, कि, अध्यापकों की अध्यापन नियोजन के प्रति उत्तरदायित्व बढता है। समय की कमी होने पर भी अगर योग्य वार्षिक नियोजन करें तो उचित रूप से अध्यापन सब घटकों का हो सकता है। आखिर जिन छात्रशिक्षकों को हम वार्षिक नियोजन सीखाते है, तो अध्यापक को लचीला नियोजन करना

भी आवश्यक है। इसमें कोई पाठ्यघटक स्वयंअध्ययन के देना भी उचित रहेगा। जिससे छात्रशिक्षकों को भी अध्ययन का अवसर मिले तथा समय की कमी संभावना से उभरा जाये।

विधान क्र. ३ में छात्रशिक्षको ने यह मत प्रकट किया है कि, सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का सहसंबंध प्रत्यक्ष अध्यापन से कैसे जोडा जाये इसके बारें में मार्गदर्शन नहीं मिलता। हो सकता है कि, अध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन मिलता हो किन्तु इनका आकलन होने छात्रशिक्षकों की क्षमता कम हो। या फिर सैद्धांतिक पाठ्यक्रम एकतरफ रहता हो और इसका उपयोजन प्रत्यक्ष अध्यापन में करने के बारें मे उचित मार्गदर्शन न मिलता हो। अत: इसका उत्तरदायित्व सिर्फ अध्यापकों का न होकर छात्र क्षमताओं का भी होता है। ऐसे छात्रशिक्षकों को अलग से प्रशिक्षण मार्गदर्शन एवं हमेशा प्रत्याभरण भी ज्यादा मात्रामें देने की आवश्यकता है।

विधान क्र. ४ में छात्रशिक्षकों द्वारा सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का अध्ययन परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्ति के लिए होता है, यह मत प्रकट हुआ है। इनकी मनोवृति, परीक्षाभिमुख एवं सिर्फ डिग्री हासील करना ही उद्देश्य मन में ठान लिया हुआ लगता है। दोष इन्हे न देकर आज की परिस्थिति तथा शिक्षा क्षेत्र में डिग्रियों के कागज का सिर्फ महत्त्व कैसे है, इसका प्रकटीकरण इस प्रतिसाद द्वारा दिखाई देता है। अत: शिक्षा क्षेत्र में मूलभूत विभाग शिक्षक प्रशिक्षण के कक्षांतर्गत मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन करने का समय आ गया है।

विधान क्र. ५ के प्रतिसाद देखने से पता चलता है कि, पाठ्यक्रम का भारीपन एवं समय की कमी की वजह से यह प्रतिसाद छात्रशिक्षकों ने दिया है।

अत: समय की कमी के संदर्भ में कोई ठोस विचार होना जरूरी है। जैसे शिक्षा शास्त्र विभाग में पूर्व संशोधित एक निष्कर्ष के अनुसार बी.एड. का पाठ्यक्रम दो वर्षका किया जाये। समय की कमी का कारण दिखाकर पाठ्यक्रम को घटाना उचित न होगा क्योंकि इससे प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्वहीन हो जायेगा एवं उद्देश्यों की परिपूर्ति न होगी। इससे पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता तो सिद्ध न होगी।

विधान क्र. ६ को प्रतिसाद देनेवाले छात्रशिक्षकों के मत से पाठ्यक्रम महत्त्व पूर्ण है ही नहीं क्योंकि सफल अध्यापक स्वयं के गुणोंपर आधारित है। यह मत एकांगी स्वरूप है। आज विज्ञान युग में बदलते युग की माँगे पूरी करने के लिए छात्रों को मार्गदर्शक की भूमिका में दिशा दिखाने के लिए कई क्षमताओं को प्राप्त करना जरूरी है। आज शिक्षक प्रशिक्षण एक शास्त्र रूप धारण कर चुका है। पाठ्यक्रम की रचना शिक्षा तज्ञों द्वारा की जाती है। इस पाठ्यक्रम द्वारा छात्रशिक्षकों को बोधात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक स्तर पर अनुभव देने के लिए तथा उसकी मानसिकता एव प्रयोगशील, प्रगतीशील, परिवर्तनाभिमुख अध्यापक के रूप में हो, जो नित नये रूप से अध्यापन कौशलो, पद्धतियाँ, प्रणालियों को अपनाये।, तथा विद्यार्थियों का त्रिगुणात्मक विकास करने की क्षमताएँ स्वयं में विकसित करने में समर्थ बन, इसलिए प्रशिक्षण लेना है।

उपर्युक्त प्रतिसाद कम मात्रा में ही सही किन्तु सच्चाई से प्रकट किये गये है, जिससे अनुसंधानकर्ति को सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के बारे में नकारात्मक पहलू के अध्ययन का अवसर मिला है। लेकिन इसमें पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के पक्ष में दिये मत व्यक्तिगत दृष्टि से प्रभावित होने से अनुपयुक्तता सिद्ध नही होती।

प्रश्न क्र. २.१ " अगर इनके अलावा अन्य कारण हो तो उन्हें लिखिए" यह प्रश्न क्र. २ का ही उतर भाग था। छात्रों को पाठ्यक्रम की उनुपयुक्तता

के पक्ष में मत प्रकट करने का अवसर मिले यही उद्देश्य इस प्रश्न का था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न को सिर्फ १४ छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है, अर्थात १६.६६ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इन प्रतिसादों में से समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित है -

सारणी क्र IV, २.अ

अ.नं.	प्रतिसाद
१.	इस में बी.ए. तक पठित किसी हिंदी साहित्य का घटक नहीं है।
२.	पाठ्यक्रम बहुत ही क्लिष्ट है, ज्यादातर कुछ समझ में नहीं आता।
३.	सब घटक हमें पढाते ही नहीं।
४.	सिर्फ परीक्षा के लिए इसका अध्ययन करना पडता है, बाकी समय तो प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशाला तथा अभ्यास [सराव] पाठ में ही जाता है।
५.	परीक्षा के ५० अंकों के लिए यह बहुत भारी पाठ्यक्रम है।
६.	कई घटकों की जानकारी सिर्फ कार्यशालामें दी जाती है, उनका न अध्यापन होता है न सीखाते है।

उपर्युक्त प्रतिसादों को देखने से मालूम होता है कि, क्र. २, ३, ४, ६ के प्रतिसाद थोडे शब्द परिवर्तन कर प्रश्न क्र. २ के विधानों को ही दोहरा दिये

गये है। अत: उनका विवेचन अनावश्यक है। प्रतिसाद क्र. १ में छात्रशिक्षकों ने बी.ए. तक पठित घटक की सूचना की है। जब कि, अनुपयुक्तता के पक्ष में यह मत नहीं बन सकता। फिर बी.ए. तक पठित आशय घटकों का समावेश करना उचित भी नहीं है।

प्रतिसाद क्रं. ५ में परीक्षा में ५० अंकों की प्राप्ति करने के लिए प्रस्तुत पाठ्यक्रम भारी है, इसका विचार मात्र होना चाहिए। अध्यापकको सफल, क्षमतापूर्ण बानाने में प्रस्तुत पाठ्यक्रम सत्वयुक्त होते हुए भी ५० अंकों की प्राप्ति हेतु १० पाठ्यक्रम घटक का अध्ययन, समय की कमी होने से ज्यादा तो है। इस संबंध में कुछ घटकों को स्व अध्यापन के लिए रखकर, तथा प्रात्यक्षिक कार्य से संबंधित पाठ्यघटकों को परीक्षा के चर्चे में स्थान न देना आदि के विषय में विचार हो सकता है।

प्रतिसाद ६ में छात्राध्यार्थि ने वास्तवता दिखाने का प्रयास किया है। दर असल कार्यशाला से पहले उसके संबंधित आशय घटकों का अध्यापन पूर्ण होना चाहिए। यह शर्त होते हुए भी कई अध्यापक महाविद्यालयों में इसका अंमल नहीं होता। अत: अध्यापकों की यह जिम्मेदारी बनती है, कि, उचित नियोजन द्वारा हर पाठ्यघटक का अध्यापन सुयोग्य समय पर करने का प्रयास करें।

प्रश्न क्र. ३ आप के मत से पुस्तुत पाठ्यक्रम को ज्यादा उपयुक्त बनाने के लिए अन्य कौन से पाठ्यघटकों का समावेश किया जा सकता है ? यह प्रश्न पूँछने का उद्देश्य यह था कि, हो न हो प्रशिक्षण लेने के लिए ऐसे कई छात्र - शिक्षक भी आते है, जिन्हों ने प्रशिक्षण पूर्व अध्यापन किया हो। उनके

अनुभवों का फायदा लेकर कुछ नये आवश्यक आशय घटकों की जरूरतों को समझा जाये, जिसका समावेश प्रस्तुत पाठ्यक्रम में न हो। इसके अलावा " डेप्युटेशन " पर आनेवाले राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत शिक्षक भी प्रशिक्षण लेने हेतु आते है, उनके अनुभवों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत प्रश्न की रचना की है। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न में करीबन छब्बीस [२६] छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है। अर्थात ३०.९५ % प्रतिशत प्रतिसाद इस प्रश्न को मिला तो है, लेकिन कोई ठोस स्वरूप का पाठ्य घटक नही सुझाया गया है, बल्कि सूचनात्मक टिप्पणीयाँ दी गयी है। अत: उनमें से समान आशयवाली सूचनाएँ छाँटकर निम्नांकित दी है -

सारणी क्र. IV . २.ब

अनुक्रम	सूचनाएँ
१.	देवनागरी का स्थान एवं महत्त्व के बारे में घटक हो।
२.	सामाजिक मूल्य तथा नैतिक मूल्य के आधार पर एकाध घटक हो।
३.	हिंदी भाषा का इतिहास एवं विकास तथा शुद्ध भाषा, मानक भाषा के संबंध में घटक हो।
४.	जीवनोपयोगी, व्यवसायाभिमुख स्वावलंबी बनानेवाले कोई घटक हो।
५.	छात्रों का भाषा विकास पाठशाला में कैसे किया जाये इस बारें में कोई घटक हो।
६.	छात्रों की मानसिक समस्याएँ, वर्तनी सुलझाने के लिए कोई घटक हो।

उपर्युक्त सुझाव या तो हिंदी साहित्य, इतिहास विकास तथा भाषा के विकास के संबंध है। इन सब का अध्ययन महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में ही सम्मिलित तो होता है। छात्रशिक्षकों का एक दृष्टिकोन जो भाषा एवं साहित्य के प्रति अभिमुख है। जो छात्रशिक्षक बी.ए. तथा एम.ए. के स्तर पर हिंदी का अध्ययन करते है, उन्हें क्र.१, क्र.३ के बारें में उचित ज्ञान होता है। किन्तु दूसरी अध्यापन पद्धति के रूप में जो हिंदी को चुनते है, उन्हे इसका ज्ञान नहीं होता। इस लिए क्र.१ व क्र. ३ के प्रतिसाद इस संबंध में महत्वपूर्ण है।

प्रचलित बी.एड. के पाठ्यक्रमांतर्गत सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के आधार पर पेपर क्र. १ का पाठ्यक्रम आधारित है, अत: अलग स्वरूप से फिर से अध्यापन पद्धति में इसकी आवश्यकता नहीं है।

क्र. ४ के प्रतिसाद के संबंध में हम यह कह सकते है, कि, कार्यानुभव कार्यशाला के अंतर्गत दो कार्यक्रम की पूर्ति द्वारा यह साध्य होता है।

क्र. ६ का प्रतिसाद के संबंध में यह कहा जा सकता है कि, पेपर क्र.२ अंतर्गत बालमानसशास्त्र के संबंध में छात्रों की समस्याएँ एवं उसे सुलझाने के घटक है। अत: फिर से अध्यापन पद्धति में इसका समावेश असंयुक्तित रहेगा।

उपर्युक्त सभी प्रतिसादों के विवेचन के बाद हम यह ठोस स्वरूप से कह सकते है कि, क्र. १ के प्रतिसाद को छोडकर बाकी के प्रतिसादों द्वारा सुझाए गई बातें पहलेसे ही पाठ्यक्रम में है। अत: पाठ्यक्रम को दोष नहीं दिया जा सकता।

प्रश्न क्र. ४ : " आप के मत से अनुचित पाठ्यघटक कौन से है ? नाम एवं उपघटकों का नाम लिखिए" - प्रस्तुत प्रश्न बंदिस्त स्वरूप का है।

अर्थात पाठ्यक्रम के घटकों तक ही सीमित प्रतिसाद इस प्रश्न का अपेक्षित था। इस प्रश्न का उद्देश्य छात्रशिक्षकों की नि पाठ्यघटकों की तरफ नकारात्मक दृष्टिकोन है, इसकी जाँच करना था। इस प्रश्न का प्रतिसाद ३० छात्राध्यापकों ने दिया है। अर्थात ३५.७१ % प्रतिशत प्रतिसाद इस प्रश्न को मिला है। यह प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

सारणी क्र. : IV. ३

अनुचित पाठ्यघटकों एवं उपघटकों की सारणी

अ.नं.	पाठ्यघटक एवं उपघटकों के अनुक्रम अक्षर			संख्या	प्रतिशत
१.	घटक - १ :	पाठ्यक्रम में हिंदी का स्थान।	[अ]	-	४.७६
			[ब]		
२.	घटक - २ :	हिंदी भाषा शिक्षा के उद्देश्य।	[अ से क, तक]	-	
३.	घटक - ३ :	हिंदी की रचना तथा गठन।	[अ]	१	८.३३
			[ब]	५	५.९५
४.	घटक - ४ :	हिंदी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन।	[अ]	-	
			[ब]	-	
			[क]	४	४.७६
			[ड]	-	
			[इ]	२	२.३८

सारणी क्र. IV : ३ [आगे शुरू...]

अ.नं.	पाठ्यघटक एवं ब्रपघटकों के अनुक्रम अक्षर			संख्या	प्रतिशत
५.	घटक – ५ :	हिंदी शिक्षाकी प्रणालियाँ तथा प्रयुक्तियाँ।	[अ]	८	९.५२
			[ब]	–	
			[क]	–	
६.	घटक ६ :	हिंदी शिक्षा के अनुभव तथा साधन।	[अ]	–	
			[ब]	११	१३.०९
			[क]	–	
७.	घटक – ७ :	हिंदी शिक्षा का नियोजन तथा व्यवस्थापन।	[अ से ड, तक]	–	
८.	घटक – ८ :	हिंदी भाषा शिक्षा के विविध अंगों का अध्यापन ।	[अ से स, तक]	– नहीं	–
९.	घटक – ९ :	मूल्यांकन प्रणाली।	[अ से क, तक]	– नहीं	–
१०.	घटक – १० :	हिंदी अध्यापक।	[अ]	११	१३.०९
			[ब]	–	
			[क]	९	१०.७१

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पत्ता चलता है कि, अनुपयुक्तता के संबंध में पाठ्यक्रम के घटक की जानकारी को बहुत ही कम प्रतिसाद मिला है।

घटक १ का "ब" उपघटक अनुचित है। यह कहनेवालों का प्रतिसाद सिर्फ ४.७६ % प्रतिशत मिला है। यह प्रतिसाद १० % प्रतिशत से भी बहुत कम है। अत: खास निर्देशनीय नही है। हो सकता है, वैयक्तिक कठिणाईयों के तहत यह प्रतिसाद दिया हो। इससे तो पाठ्यक्रम घटक की अनुचितता सिद्ध नही की जा सकती।

घटक क्र. २ को एक भी अनुचित पाठ्यघटक के रूप में प्रतिसाद नही मिला है।

घटक क्र. ३ के "अ" उपघटक को ८.३३ % प्रतिशत आरै "ब" को ५.९५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। कुल मिलकर यह प्रतिसाद १० % प्रतिशत से ज्यादा है। अत: इस घटक को अनुचित पाने के कारणों को प्रकट करने के लिए प्रश्न क्र. ५ में उन्हें अवसर दिया है। हिंदी भाषा में समावेशित मुख्य संकल्पनाएँ, सामान्यीकरण के तत्व तथा कक्षानुसार हिंदी भाषा का ज्ञान पाने के लिए तर्कशुद्धता, विश्लेषण शक्ती का अभाव होने से हो सकता है, यह पाठ्यघटक छात्रशिक्षकों को अनुचित लगा हो। परंतु यह पाठ्यघटक हिंदी अध्यापक की भूमिका में अहम् स्थान रखता है। इससे हिंदी अध्यापकों की हिंदी भाषा के विश्लेषणात्मक, चिकित्सात्मक दृष्टिकोन का अभाव लगता है। इस लिए प्रशिक्षण का दर्जा [स्टॅण्डर्ड] बनाने हेतु एवं बढाने हेतु छात्र - शिक्षकों को श्रेणी के साथ अभिरुचि, अभिवृत्ति कसौटी के माध्यमों से चुना जाये तो अच्छा रहेगा। अत: प्रवेश प्रक्रियामें इसका जरूर विचार होना चाहिए।

घटक क्र. ४ के "क" उपघटक को अनुचित पाठ्यघटक के रूप में ४.७६ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। तथा "ड" पाठ्य घटक को २.३८ % प्रतिसाद मिला है। इन के मतसे पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ तथा उनका आलोचनात्मक

अध्ययन यह पाठ्यघटक अनुचित है। इसको मिला हुआ प्रतिसाद अत्यल्प स्वरूप का है। कोई खास निर्देशानिय नहीं है।

घटक क्र. ५ के "अ" उपघटक को अनुचित घटक कहलेवाले प्रतिसाद ९.५२ ٪ प्रतिशत मिला है। अत: इसे अनुचित किसलिए कहते है, इसका मत प्रकटीकरण का अवसर प्रश्न क्र. ५ में तो दिया है। हिंदी शिक्षा की विविध प्रणालियाँ विशिष्ठ आशय घटक के लिए ही उपयुक्त है। अत: छात्रों की वैयक्तिक दृष्टिकोन से ही उन्हें यह घटक हो सकता है। अनुपयुक्त लगता है।

घटक क्र. ६ के " उपघटक " ब" को अनुचित पाठ्यघटक के रूप में १३.०९ ٪ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अर्थात अध्यापन साहित्य एवं साधनों के सैद्धांतिक घटक को अनुचित कहा गया है। चूँकि यह पाठ्यघटक ज्यादा तर प्रत्यक्ष कार्याभिमुख है। अध्यापक महाविद्यालयों में इसकी जानकारी सिर्फ सैद्धांतिक स्वरूप की हीं दी जाती है, वह अनुचित है। इसको बनाने की विधि से तथा उपयोग मे लाने के प्रत्यक्ष अनुभवों से वंचित रहने से ही यह प्रतिसाद मिला है। अत: इनके प्रत्यक्ष कार्य की आयोजना के संबंध में विचार होना चाहिए।

घटक क्र. ७, ८, ९ के संबंध में कोई भी प्रतिसाद नहीं मिला है।

घटक क्र. १० के उपघटक "अ" को १३.०९ ٪ प्रतिशत मिला है, तो उपघटक "क" को १०.७१ ٪ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। कुल प्रतिसाद ज्यादा होने से एवं उपर्युक्त प्रतिसादों के अन्वयार्थ से लगता है कि, यह पाठ्यघटक स्वयं अध्ययन को देना चाहिए। क्योंकि सैद्धांतिक जानकारी पाने के लिए

छात्रों को अनुचित लगता है। किन्तु इससे घटक की सदोषता नहीं सिद्ध होती।

प्रश्न क्र. ५ : " प्रस्तुत पाठ्यक्रम घटक आप को अनुचित क्यों लगते है ? उनके कारण दीजिए -" था। यह प्रश्न उपर्युक्त प्रश्न क्र. ४ से संबंध रखता था। यह प्रश्न मुक्त स्वरुप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य था कि, छात्रशिक्षकों को जो अनुचित पाठ्यघटक लगते है, उसके बारें में कारणों को जानना तथा वे पाठ्यघटक उन्हें अनुचित क्यों लगते है, इसके पीछे किस प्रकार की मानसिकता है, उसे जाँचना। इस प्रश्न का उत्तर भी उन्हीं ३० छात्रशिक्षकों ने दिया है, जिन्होंने प्रश्न क्र. ४ का उत्तर दिया है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि, उनके नकारात्मक प्रतिसाद उनके व्यक्तिगत समस्याओं के कारण दिये गये लगते है। इसमें बहुत कम प्रतिसाद ही ऐसे है, जो संयुक्तिक लगते है। अत: कुछ समान आशयवाले प्रतिसाद छाँटकर निम्नांकित दिये है। प्राप्त ३५.७१ % प्रतिशत प्रतिसाद में से संयुक्तिक प्रतिसाद अत्यंत ही कम है।

सारणी क्र. IV . ३.अ

अ.नं.	प्रतिसाद
१.	हिंदी का अन्य विषयों से अनुबंध की आवश्यकता ही नहीं। हर विषय स्वतंत्र है।
२.	विषयांतर्गत अनुबंध कैसे है, वह समझाया नहीं जाता न समझ में आता है।
३.	

सारणी क्र. IV .३.अ[आगे शुरू..]

अ.नं.	प्रतिसाद
३.	हिंदी की रचना तथा गठन इस घटक अध्ययन करने से भविष्यकाल के अध्यापन में फायदा नहीं है।
४.	यह घटक बहुत ही क्लिष्ट है। यह समझ में नही आता।
५.	घटक क्र. ३ का अध्ययन तो आशययुक्त अध्यापन कार्यशालामें होता है। अतः परीक्षा के लिए यह घटक न हो।
६.	घटक क्र. ४ के उपघटक "क" अध्ययन तो सैद्धांतिक न होकर सिर्फ प्रत्यक्ष कार्य अहवाल का हो।
७.	घटक क्र. ४ के "इ" का अध्ययन हम आशययुक्त अध्यापन कार्यशाला में करते ही है। फिर वह परीक्षा के लिए जरूरी नही है। इसलिए अनुचित है।
८.	घटक क्र. ६ का "ब" अनुचित है, क्योंकि ज्यादा तर ग्रामीण पाठ-शालाओं मे न इनकी उपलब्धता होती है न यह उपयोगी है।
९.	अध्यापन के ये साधन महँगे है, इन्हे जुटाने में दिक्कते आती है, इस द्वारा अध्यापन करने से समय की बरबादी होती है।
१०.	समय कम है इसलिए घटक क्र. १०, ३ जैसे घटक अनुचित है, क्योंकि उनका तो अध्यापन अध्यापक महाविद्यालय में होता नही।. उसपर सिर्फ अहवाल लेखन काफी है। इसलिए वे अनुचित है। वे परीक्षा के लिए न रखे।

प्रश्न क्र. ५ के प्राप्त इन प्रतिसादों को देखने से यह पत्ता चलता है कि, क्र. १ में अंतर्गत अनुबंध एवं अन्य विषयों से अनुबंध के बारे में छात्रों की नकारात्मक प्रवृति दिखलाई देती है, जबकी हर विषय सर्वसमावेशक, समादि रुप से देखना चाहिए। इसका कारण तुरंत क्र. २ व क्र. ४ के प्रतिसादों में दिखाई देता है। अध्यापकों द्वारा अनुबंध की संकल्पना समझा नहीं दी जाती इसीलिए उन्हें घटक क्लिष्ट भी लगता है। अत: इसके लिए अध्यापकों द्वारा उचित मार्गदर्शन मिलना जरुरी है।

क्र. ३ एवं क्र. ५ के प्रतिसाद द्वारा यह चित्र दिखाई देता है कि, छात्रों की पुन: पुन: अध्ययन में रुचि नहीं। जबकी भविष्यकाल में अध्यापक की भूमिका का मूलभूत त ही यह घटक है। हो सकता है कि, छात्रों की रुचि सिर्फ परीक्षाभिमुख घटकों में है, इसीलिए बारीकी से अध्ययन के लिए वे मानसिक रुप से हिचकिचाते है। अत: इन पाठ्यघटकों के प्रति उचित अभिरुचि निर्माण होने के लिए अध्यापक को सजग रहना चाहिए तथा छात्रध्यापकों को उचित रुप से प्रेरणा देनी चाहिए।

घटक क्र. ४ के इ के बारे में भी परीक्षाभिमुख प्रतिसाद देखने को मिलता है, जिसकी वजह अध्ययन पुनरावृति के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। इसका महत्त्व समझाये जाना चाहिए।

प्रतिसाद क्र. ८ व ९ जो घटक नं. ६ संबंधित है, इनके द्वारा छात्रशिक्षकों ने स्वयं की परिस्थितिवश आनेवाली वास्तव अडचणों का जिक्र किया है, जो उन्हें अनुभव के बाद आई समस्याएँ दिखती है, या जिस वातावरण से वे आये है, उसी के संबंध में यह प्रतिसाद है। लेकिन नये युगों की तंत्रविज्ञानाभिमुख आवश्यकताओं को मद्देनजर रखकर यह पाठ्यघटक आपनी

खास जगह लिए हुए है। चूँकि सभी अध्यापक तो ग्रामीण भाग में अध्यापन स्वरुप से सेवा न करेंगे। इसलिए यह पाठ्यघटक उचित ही है। साधनों को जुटाने मे दिक्कते बताना, यह उदासीनता हुअी। विविधांगी, रुचिपूर्ण अध्यापन होने के हेतु तथा उद्देश्यों को सफल करने के लिए अध्यापन साधनों की आवश्यकता तो है,। इससे पाठ्यक्रम की सदोषता सिद्ध नहीं होती। बल्कि आज सरकार की शिक्षा के प्रति " पॉलिसी " देखकर यह चित्र स्पष्ट रुप से सामने आता है कि, साधनों की उपलब्धता तो सरकार द्वारा होती है किन्तु उसका बँटवारा निम्न स्तर पर योग्य ढंग से न होने के कारण उदासीनता आती है।

इसके अलावा यह भी एक ध्यान देने योग्य है, प्रतिसाद " समय की कमी या अभाव के कारण " घटकों की अनुचितता लगती है। आज तक अनुसंधानित विषय जो बी.एड. से संबंधित है उनमें भी समय की कमी का जिक्र निष्कर्ष में किया गया है। अत: यह निश्चित एक गंभीरता से सोचने की समस्या है। इसपर विचार होना चाहिए।

प्रश्न क्र. ६ " आप के मत से अनुचित पाठ्य-घटकों को निकालकर कौन से अन्य घटकों का समावेश उनकी जगह पर करना चाहिए ? क्यों ? " प्रस्तुत प्रश्न मुक्त स्वरुप का था। छात्रशिक्षकों के मत से अनुचित पाठ्यघटक की जगह कौन से आशय घटक रखे जा सकते है तथा पाठ्य घटक में परिवर्तन लाये जाने के कारण क्या है, इसकी जाँच पडताल करने हेतु इस प्रश्न की रचना की थी। इस प्रश्न का जवाब अठ्ठाईस [२८] छात्रशिक्षकों ने दिया है। अर्थात ३३.३३ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। बडी हैरानी से यह कहना पडता है कि छात्रशिक्षकों को हिंदी साहित्य तथा व्याकरण के आशय घटकों को

समावेश करने की जरूरत बताई गई है। इनमें से समान आशय वाले प्रतिसाद छाँटकर नीचे दिये है -

सारणी क्र. IV. ३.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	बी.ए. तक पठित हिंदी साहित्य से संबंधित घटक रखने चाहिए।
२.	संपूर्ण व्याकरण पर दो घटक रखें जाये। ताकि व्याकरण अध्ययन हमारा भी होता है और आगे चलकर अध्यापन में हमें वह उपयुक्त होगा।
३.	घटक क्र. १० "हिंदी शिक्षक" में जो तीन उपघटक है, उनको निकाल कर "बालमानसशास्त्र" समस्या" का एकाध घटक रखे।
४.	समय कम पडता है इसलिए या तो घटक कम कीजिए या समय बढाईए।

उपर्युक्त स्वरूप के प्रतिसाद में ज्यादा से ज्यादा क्र. ४ का तथा क्र. २ के समान आशयवाले है।

क्र. १ का प्रतिसाद देनेवाले छात्रशिक्षकों की वृति अभी भी हिंदी साहित्य का अध्ययन से प्रभावपूर्ण लगती है। किन्तु जिसका अध्ययन वे पहले

ही कर चुके है, उन्हें फिर से दोहराने से कोई फायदा नही। इनका अध्ययन आगे एम.ए. की डिग्री के लिए वे कर सकते है।

क्र. २ का प्रतिसाद, "संपूर्ण व्याकरण पर दो घटक हो" यह प्रतिसाद उन छात्रशिक्षकों के लिए विचार में लेना चाहिए, जो या तो "दूसरी अध्यापन विधि" के रूप में हिंदी अध्यापन विधि को चुनते है, या जिन्हे एफ.वाय.बी.ए. के हिंदी विषय होने से " हिंदी अध्यापन पद्धति " के लिए प्रवेश बक्षा होता है। बी.ए. तक आते आते तो छात्रशिक्षक व्याकरण का पूरा अध्ययन कर चुके होते है, और चाहे तो अलग रूप से कर सकते है। इसीलिए पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक भाग में जरूरी नहीं किन्तु " विषय विशेष प्रात्यक्षिक कार्य " अंतर्गत कोई प्रत्यक्ष कार्य रखा जावे तो यह विचार संयुक्तिक ठहर सकता है।

क्र. ३ का प्रतिसाद भी विचारपूर्ण नही लगता। चूँकि पेपर क्र. २ में बालमानसशास्त्र समस्या के बारे में उन्हे अध्ययन का अवसर तो मिलता ही है। अत: अनुसंधानकर्ता के विचार से पाठ्यघटक १० को पूर्णत: निकलने के बजाय उसे स्वयं अध्ययन को दे और एक छोटी संशोधन पुस्तिका लेखन के लिए इस घटक का विचार अवश्य होना चाहिए।

क्र. ४ का सुझाव वक्त की नजाकत को देखते हुए ठीक लगता है। किन्तु समय की कमी कारण देकर पाठ्यघटकों को घटाना यह कोई उपाय योग्य नहीं लगता। संरचित टाईम टेबल को छोडकर हफ्ते में एक या दो तासिकाएँ अध्यापक ज्यादा ले तो समस्या हल हो सकती है, कई घटक स्वयं अध्ययन को लेकर, कोई घटक चर्चा पद्धति से अध्ययन को देकर भी यह समस्या

हल हो सकती है। या तो फिर बी.एड. का प्रशिक्षण कालावधि बढाकर भी यह समस्या मिट सकती है। अत: इस पर विचार होना जरूरी है।

इसके अलावा " देवनागरी भाषा एवं उसका सार्वत्रिकिकरण का घटक " का एक सुझाव है। देवनागरी के बारें में वैसे काफी ज्ञान छात्रशिक्षक प्राप्त कर चुके होते है और उसका सार्वत्रिकिकरण यह प्रशासनिक बात हुई।

साथही कई छात्रशिक्षकों ने " शिक्षातज्ञों द्वारा विचाराअंती पाठ्यघटक कम् करने चाहिए " इस प्रकारके दो सुझाव भी मिले है। किन्तु ठोस स्वरूप से कोई पाठ्यघटक क्यों रखे जाये, उसका महत्त्व, उपयुक्तता के बारें में कोई सुझाव नहीं मिला।

उपर्युक्त सभी प्रतिसादों को देखने से यह पता चलता है कि, प्रशिक्षण के लिए प्रवेश प्राप्त छात्रशिक्षक बी.ए. तक पठित आशय से प्रभावित होते है। अध्यापक के संबंध में शास्त्रीय दृष्टिकोन से विचार करने की शक्ति उनमें कम होती है। अत: अध्यापन से संबंधित शास्त्रीय दृष्टिकोन विकसित करना, यह अध्यापक की एक अहम जिम्मेदारी है। इसके लिए प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यशालाओं के दरम्यान चिकित्सात्मक, शास्त्रीय दृष्टिकोन अपनाने के लिए, उसे विकसित करने के प्रयत्न होने चाहिए।

प्रश्न क्र. ७ : " माध्यमिक पाठशाला के लिए निर्धारित हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों को सफल करने में प्रचलित पाठ्यक्रम के कौन से घटक पर्याप्त है ? उनके नाम लिखिए -" प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था, क्योंकि प्रतिसाद में पाठ्यघटकों की सीमीतता ही अपेक्षित है। यह प्रश्न पूछने का उद्देश्य यह था कि, हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों के प्रति छात्रशिक्षक

कितने जागृत है, इसकी जाँच पडताल करना था। प्रस्तुत प्रश्न को पचपन [५५] छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है, अर्थात ६५.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

सारणी क्र. IV. ४

माध्यमिक पाठशाला में निर्धारित उद्देश्यों की सफलता के लिए पाठ्यक्रम घटक

अनुक्रम		पाठ्यघटक	संख्या	प्रतिशत
१.	घटक - १ :	पाठ्यक्रम में हिंदी का स्थान।	२१	३८.१८
२.	घटक - २ :	हिंदी भाषा शिक्षा के उद्देश्य।	२०	३६.३६
३.	घटक - ३ :	हिंदी की रचना तथा गठन।	११	२०.००
४.	घटक - ४ :	हिंदी पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन।	७	१२.७२
५.	घटक - ५ :	हिंदी शिक्षा की प्रणालियाँ तथा प्रयुक्तियाँ।	७	१२.७२

सारणी क्र. IX.४ [आगे शुरू..]

अनुक्रम			पाठ्यघटक	संख्या	प्रतिशत
६.	घटक – ६	:	हिंदी शिक्षा के अनुभव तथा साधन।	८	१४.५४
७.	घटक – ७	:	हिंदी शिक्षा का नियोजन तथा व्यवस्थापन।	१७	३०.९०
८.	घटक – ८	:	हिंदी भाषा शिक्षा के विविध अंगों का अध्यापन।	१८	३२.७२
९.	घटक – ९	:	मूल्यांकन प्रणाली	२	३.६३
१०.	घटक–१०	:	हिंदी अध्यापक।	५	९.०९
			एकूण	११६	

उपर्युक्त सारणी में देखा जाये तो करीबन १० घटकों को हिंदी भाषाध्यापक के उद्देश्यों को सफलता दर्शानेवाला प्रतिसाद मिला है। सच कहा जाये तो पाठ्यक्रम के सभी घटकोंद्वारा माध्यमिक पाठशालामें निर्धारित राष्ट्रभाषा के उद्देश्यों को सफलता मिलती है, यह कहना भुलावा है। चूँकि ५५ छात्रध्यापकों के ६५.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद द्वारा इस प्रश्न उत्तर तो दिया है, अर्थात प्रश्न का उद्देश यकीनन सफल तो हुआ है, किन्तु छात्रों-

द्वारा आँखे बंद करके दिया हुआ प्रतिसाद ज्यादा है।

माध्यमिक पाठशालाओं में निर्धारित उद्देश्यों के संबंध में जानकारी देनेवाले इस पाठ्यक्रम के घटक है - घटक क्र. १ : अ, घटक क्र. २ : अ, ब, क यह घटक सीधे माध्यमिक पाठशाला में निर्धारित राष्ट्रभाषा अध्यापन के उद्देश्यों से संबंधित है। साथ ही घटक क्र. ६ : अ, क तथा घटक क्र. ८ के सभी उपघटक दुय्यम रूप से राष्ट्रभाषा अध्यापन के उद्देयों को सफलता दिलाने में सहाय्यक ठहरते है। अत: इन्ही घटकों को ज्यादा से ज्यादा प्रतिसाद मिलना चाहिए।

उपर्युक्त चर्चित घटकों को मिला हुआ प्रतिसाद के बारें में यहाँ विवेचन आवश्यक ठहरता है, न की उद्देश्यों से असंबंधित घटकों के विवेचन की आवश्यकता ही नहीं।

घटक क्रं. १ को ३८.१८ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। माध्यमिक पाठशाला में त्रिभाषा सूत्रानुसार हिंदी का स्थान, महत्त्व, अनुबंध की दृष्टि से यह घटक महत्वपूर्ण है। इसे ज्यादा प्रतिसाद देकर छात्रशिक्षकों ने यह सिद्ध किया है कि, वे पाठ्यक्रम के प्रति जागृत है।

घटक क्र. २ को ३६.३६ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे पता चलता है कि, हिंदी भाषा शिक्षा के व्यापक उद्देश्य, माध्यमिक पाठशाला के भाषा शिक्षा के उद्देश्यों को छात्रशिक्षक समझ गये है।

घटक क्र. ३ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। भाषाध्यापन के उद्देश्यों के पूरक घटक होने से भी [हिंदी रचना तथा गठन] शायद

इसका आकलन करने की शक्ति न होने से इसका प्रतिसाद कुछ कम लगता है।

घटक क्र. ४ को १२.७२ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों से सघन संबंध रखते हुए भी इसको कम प्रतिसाद मिला है। क्योंकि इस घटक का तथा हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों की पाठ्य - पुस्तकांतर्गत युनिटों से परस्परसंबंधता समझने का अभाव छात्रशिक्षकों मे लगता है। इसके बारे में मार्गदर्शन पर कोई विचार होना आवश्यक है।

घटक क्र. ५ को १२.७२ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अलग अलग भाषाध्यापन के आशय व उद्देश्यों को सफलता दिलाने संदर्भ में अध्यापन की प्रणालियाँ तथा प्रयुक्तियाँ की आवश्यकता भी है, तथा इनका सुप्त संबंध भी है। किन्तु इनका परस्पर संबंध समझने का अभाव तथा मार्गदर्शन का अभाव होने से इसे कम प्रतिसाद मिला है। इसके बारे में मार्गदर्शन पर कोई विचार होना आवश्यक है।

घटक क्र. ६ को १४.५४ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। हिंदी भाषा के व्यापक उद्देश्य एवं विशिष्ठ उद्देश्यों को संपन्न कराने में प्रस्तुत घटक पूरक रूप में भूमिका निभाता है। इसके संबंध में जागृतता दिलाने में पाठ्यक्रम घटक की योजना तो हुई है, किन्तु प्रतिसाद देखते हुए कहना पडता है कि, इसका आकलन होने में छात्रशिक्षक गलती करते है या उचित मार्गदर्शन नही मिलता। इसके बारें में भी विचार होना आवश्यक है। इस घटक के "अ", "ब" का आयोजन प्रत्यक्ष कार्यानुभव द्वारा हो जाये तो सहायता मिल सकती है।

घटक क्र. ७ को ३०.९० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद को देखकर यह लगता है कि, बिना सोचे समझे या "क" उपघटक के

प्रभाव से ज्यादा प्रतिसाद दिया गया है। जब कि, भाषाध्यापन के प्राथमिक उद्देश्यों की आयोजना करने के लिए साधन स्वरूप उपघटक "क" एवं "ड" उपयोग में लाये जाते है।

घटक क्र.८ को ३२.७२ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह संपूर्ण घटक हिंदी सीखने के विशिष्ठ उद्देश्यों की सफलता कैसे है की जा सकती है, विशिष्ठ उद्देश्यों के लिए कौन से हिंदी भाषा के अंग का अध्यापन उपयुक्त होता है, इसके संबंध में जानकारी ज्ञान देने में उपयुक्त है।

घटक क्र. ९ को बहुत ही कम ३.६३ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। भाषाध्यापन के उद्देश्यों से संपूर्णत: असंबंधित होने से इसका प्रतिसाद असंयुक्तिक एवं अनिर्देशनीय है।

घटक क्र. १० को ९.०९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस घटक का हिंदी अध्यापन उद्देश्यों से कोई संबंध नही। अत: यह प्रतिसाद असंयुक्तिक एवं अनिर्देशनीय है।

प्रश्न क्र. ८ : " माध्यमिक पाठशाला में जो घटक अनुपयुक्त है, या पर्याप्त नही है, वे घटक, क्यो उपयुक्त नही लगते ? इसके कारण दीजिए -" यह था। प्रस्तुत प्रश्न मुक्त स्वरुप का था। यह प्रश्न ७ का नकारात्मक प्रतिसाद प्राप्त करने हेतु रखा गया था। साथ ही पाठ्यक्रम के वे कौनसे घटक हो सकते है, जिनसे माध्यमिक स्तर के हिंदी विषय पाठ्यक्रम के उद्देश्य असफल होते है ? तथा उसके कारण क्या हो सकते है, इसके

बारे में जानकारी हासील करना था। प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर करीबन ३४ छात्रों ने दिया है। अर्थात ४०.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद दिया है। इनमें समान आशयवाले उत्तर छंटवाकर नीचे दिये गये है।

सारणी क्र. IV.४.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद [उत्तर]
१.	पाठ्यक्रम मे भाषा के अनुभव देनेवाले के संबंध में घटकों का समावेश नही इसलिए पाठ्यक्रम कम उपयुक्त है।
२.	अध्यापन साधनाओं द्वारा भाषा के भावभावनाओं को नहीं दिखा सकते।
३.	हिंदी का प्रणालियाँ द्वारा पाठशाला में अध्यापन नहीं हो सकता।
४.	समय की कमी होती, पाठशाला के टाईमटेबल में तासिकाएँ कम है, इसीलिए सिर्फ बी.एड. में पढनेसे कोई फायदा नही।
५.	घटक ३ जैसे घटक बहुत क्लिष्ट है, इसका आकलन नही होता।

उपर्युक्त प्रतिसादों मे से क्र. ४ एवं ५ क्र. के प्रतिसाद ज्यादा मिले है। इसमें भी समय की कमी, क्लिष्टता, आकलन न होना इ. कारण दिये

है। इन तीनों का कोई संबंध भाषाध्यापक के उद्देश्यों की सफलता में घटक के अनुपयुक्तता के संदर्भ में है, नही अत: यह संपूर्णत: अनिर्देशनीय है। घटक क्र. १ का प्रतिसाद भी असंयुक्तिक है, चूंकि घटक क्र, ८ द्वारा इसकी पूर्ति होती है।

क्र. २ का प्रतिसाद भी वैयक्तिक दृष्टिकोण है, क्योंकि भाव - भावनाओं का अविष्कार आशय स्पष्टिकरण, चेतक परिवर्तन द्वारा होता है, अध्यापन साधनों के उद्देश्य अलग है। इसलिए यह कारण भी असंयुक्तिक लगता है।

क्र. ३ का प्रतिसाद भी असंयुक्तिक है, क्योंकि विशिष्ठ भाषा आशय के लिए अलग अलग अध्यापन प्रणालियों का अनुगमन करने से अध्यापन रुचिपूर्ण एवं सफल होता है। लेकिन इसके प्रति उदासीनता दिखाई दे देती है।

उपर्युक्त प्रतिसादों में से अनुपयुक्तता के पक्ष में कोई ठोस कारण नही मिलते। यही कारण है कि उपयुक्तता सुप्त रूप से अपनी जगह पर है।

प्रश्न क्र. ९ : " प्रस्तुत पाठ्यक्रम हिंदी अध्यापन विधि के लिए निर्धारित उद्देश्यों को सफलता दिलाने में क्या पर्याप्त है ? " प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। क्योंकि इसका उत्तर " हाँ / नही " इन्ही दो पर्यायों में से एक से सहमती देते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि हिंदी अध्यापन विधि के पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्य सफल होने के लिए पाठ्यक्रमांतर्गत आशय घटक उपयुक्त ठहरते है या नही ? साथ ही उद्देश्यों

के प्रति छात्रशिक्षक कितने जागृत है ? इसकी जाँच पडताल करना था। इस प्रश्न को मिला हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र: IV . ५

हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम के उद्देश्य सफलता में

पाठ्यक्रम की पर्याप्तता

अनुक्रम	पर्याय	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७०	८३.३४
२.	नहीं	१४	१६.६६

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, ८३.३४ % प्रतिशत छात्रशिक्षकों द्वारा प्रतिसाद "हाँ के पक्ष में दिया है। अर्थात ८३.३४ % प्रतिशत मतों से यह पाठ्यक्रम उसके निर्धारित उद्देश्यों को सफल बनाता है। तो १६.६६ % प्रतिशत मतों से पाठ्यक्रम उद्देश्य सफलता के लिए पर्याप्त नही है क्योंकि १६.६६ % प्रतिशत प्रतिसाद " नही " के पक्ष में मिले है। किन्तु " हाँ " के पक्ष में प्रतिसादों की तुलना में " नहीं " के पक्ष में मिले प्रतिसाद अत्यंत कम है। अत: पाठ्यक्रम के उद्देश्य सफलता के लिए पाठ्यक्रम पर्याप्त है।

प्रश्न क्र. ९.१ : " अगर आप के मत से प्रस्तुत पाठ्यक्रम अपर्याप्त है तो उनके कौन से कारण हो सकते है ? रिक्त स्थान में कारण लिखिए - यह प्रश्न क्र. ९ का ही उत्तर भाग था। यह प्रश्न मुक्त स्वरुप का था। नकारात्मक प्रतिसाद के कारणों को जानने हेतु इस प्रश्न की रचना की थी। इस प्रश्न का उत्तर १७.८५ % प्रतिशत मिला है। इस प्रश्न के उत्तर से प्राप्त प्रतिसाद समान आशयवाले छाँटकर निम्नांकित दिये है -

सारणी क्र. IV . ५.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	उद्‌देश्यों की क्लिष्टता से कहा नही जा सकता की क्या कारण है।
२.	हिंदी का संभाषण, भाषण, व्याकरण अध्ययन के घटक अल्प है, अत: उद्‌देश्यों की सफलता पूर्णत: नही होती।
३.	परीक्षा के लिए भारी अभ्यासक्रम है, इसका अध्ययन ठीक तरह से होना असंभव लगता है।
४.	अध्यापक महाविद्यालयों मे सही अध्यापन न होने से उद्‌देश्य सफल नही होते।
५.	घटक क्र. ८ से संबंधित उद्‌देश्य सफल नही होते क्योंकि सिर्फ अध्यापन करते है, हिंदी भाषा के अंगों का अध्यापन कैसे करे, इसके संदर्भ में क्षमताएँ प्राप्त करने का अवसर कम मिलता है। ऐसे और भी घटक है - जैसे कि, घटक ६, घटक १० इ. इससे उद्‌देश्य सफल नही होते है।

उपर्युक्त प्रतिसादों में से क्र. १ का प्रतिसाद ज्यादा लोगों ने दिया है। अतः पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के संबंध में मार्गदर्शन के अभाव से जानकारी नहीं मिलती या उन्हें आकलन नहीं होता।

क्र. २ के प्रतिसाद असंयुक्तिक लगता है क्योंकि, हिंदी अध्यापक के लिए मूलभूत आवश्यकताएँ मानी गई है। इसका अध्ययन वे अपने तरीके से कर सकते है।

क्र. ३ का प्रतिसाद भी व्यक्तिगत अडचन है। इससे पाठ्यक्रम का दोष नहीं सिद्ध होता।

क्र. ४ का प्रतिसाद द्वारा कार्यनीति की ओर ध्यान जाता है। फिर भी सही अध्यापन के मायने रखकर अध्यापकों को सभी पाठ्यघटकों का उचित अध्यापन करना चाहिए, बल्कि ज्यादा तर अध्यापक करते भी है।

क्र. ५ के प्रतिसाद को देखकर ऐसा लगता है कि, सिर्फ सैद्धांतिक अध्ययन होने से तथा इसके कृतियों को अवसर न पाने से यह प्रतिसाद आया है। अतः भाषा के विविध अंगों को उपयोग में लाकर पाठ लेने होंगे। कई घटक स्व अध्ययन के लिए देने चाहिए।

लेकिन उपर्युक्त सभी प्रतिसादों द्वारा पाठ्यक्रम की अपर्याप्तता पर कोई खास प्रकाश नहीं डाला गया है। ज्यादा से ज्यादा प्रतिशत प्रतिशत प्रतिसाद पर्याप्तता के पक्ष में जाने से यकीनन यह पाठ्यक्रम उद्देश्यों को सफलता दिलाने में पर्याप्त है। कार्यनीति से अलग समस्याएँ है।

प्रश्न क्र. १० : " राष्ट्रभाषा के नाते हिंदी का अध्यापन करते समय कुछ अलग जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएँ है, इन्हे पूर्ण करने की दृष्टि से क्या प्रस्तुत पाठ्यक्रम पर्याप्त है " ? यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इसका प्रतिसाद छात्राध्यापकों को " हाँ / नही " इन दो पर्यायों में से एक से सहमती देते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य राष्ट्रभाषाध्यापक के उद्देश्य से छात्र - शिक्षक कितने जागृत है, तथा राष्ट्रभाषा के उद्देश्य को जानने हेतु भी निर्धारित हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम के कौन से घटक मदद कर सकते है ? इसकी जानकारी रखते है भी या नही ? इस बारें मे जाँच पडताल करनी थी प्रस्तुत प्रश्न को मिला हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया गया है -

सारणी क्र. IV : ६

राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएँ संपन्न कराने मे

पाठ्यक्रम की पर्याप्तता

अनुक्रम	पर्याय	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७०	८३.३४
२.	नहीं	१४	१६.६६

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, हाँ के पक्ष में प्रतिसाद देने वाले ८३.३४ % प्रतिशत छात्रशिक्षक है, तथा "नहीं" के पक्ष में

१६.६६ % प्रतिशत छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है। "नहीं" स्वरूप का प्रतिसाद "हाँ" की तुलना अत्यंत कम है। इससे जाहीर है कि, ज्यादा से ज्यादा छात्रशिक्षकों के मत से राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारियाँ समझा देने में यह पाठ्यक्रम पर्याप्त है।

प्रश्न क्र. १०.१ : अगर "हाँ" तो उसके पक्ष में अपने मत लिखिए" यह प्रश्न १० का ही उत्तरभाग है। यह मुक्त स्वरूप का प्रश्न था। इसका उद्देश्य पाठ्यक्रम से राष्ट्रभाषा की किन अपेक्षाएँ, जिम्मेदारियाँ पूर्ण होती है, इसकी जाँच पडताल करना था। इस प्रश्न को ४६.४२ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इसके समान आशयवाले प्रतिसाद छाँटकर निम्न सारणी में दिये है -

<u>सारणी क्र. IV.६.अ</u>

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	राष्ट्रीय एकात्मता के लिए आवश्यक पूर्ति कराने में पाठ्यक्रम सहायक है, इसलिए पर्याप्त है।
२.	राष्ट्रभाषा एवं उसके उद्देश्यों को समझने में पाठ्यक्रम के २ घटक मदद करते है, इसलिए पर्याप्त है।
३.	राष्ट्रभाषा के अनुकूल हिंदी शिक्षा के अनुभव एवं अभ्यासानुवर्ति कार्यक्रम इसमें है, इसलिए पर्याप्त है।
४.	भाषाध्यापन की नयी प्रणालियाँ, पद्धतियाँ मालूम होने से राष्ट्रभाषा का अध्यापन रुचिपूर्ण होने में मदद मिलती है। इससे उद्देश्य भी सफल होंगे। तो इसीलिए पाठ्यक्रम ठीक लगता है, इससे भाषाध्यापन में नवीन विचारप्रणाली भी आती है।

सारणी क्र. IV.६.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	प्रतिसाद
५.	संपर्क भाषा के रूप में स्थान मालूम हुआ, इसका उपयोग आगे भविष्य में है इसलिए पर्याप्त है।
	इसके साथ साथ कई असंयुक्तिकप्रतिसाद भी मिले है, जो निम्नांकित है। -
	अ] राष्ट्रभाषा का महत्व सब स्तर पर है, इसलिए पर्याप्त लगता है।
	ब] अध्यापन साहित्य तथा भाषाविषयक ज्ञान मिलता है।

उपर्युक्त क्र. १ से ४ तक के प्रतिसादों द्वारा यह देखने को मिलता है, राष्ट्रभाषा की अलग जिम्मेदारियाँ पूर्ण करने में एवं अलग अपेक्षाएँ समझा देने में घटक क्र. १, २, तथा ६.क ज्यादा उपयुक्त है। क्योंकि हिंदी भाषा का भारतीय जीवन में स्थान, संस्कृति में योगदान, शालेय पाठ्यक्रम में स्थान तथा संपर्क भाषा के रूप में उसकी भूमिका, संस्कृति आदान-प्रदान में योगदान इ. विषयक अपेक्षाएँ, जिम्मेदारियाँ समझ लेने में यह घटक उपयुक्त है।

असंयुक्तिक स्वरूप के प्रतिसाद पाठ्यक्रम की जिम्मेदारियाँ अपेक्षाओं के संदर्भ में नहीं है, अत: अनिर्देशनीय है।

प्रश्न क्र. : १०.२ : " अगर प्रचलित पाठ्यक्रम अपर्याप्त है, तो कैसे ? इसके बारे में अपने मत लिखिए -" था। यह प्रश्न भी प्रश्न क्र. १० का उत्तरभाग था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था, तथा इसका उद्देश्य यह था कि, राष्ट्रभाषाध्यापन की अलग जिम्मेदारियाँ समझाने में प्रस्तुत पाठ्यक्रम अगर अपर्याप्त है तो कैसे ? इस के बारें में जानकारी लेना था। प्रस्तुत प्रश्न को १३ छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है, अत: १५.४७ % प्रतिशत मिला है।

इनमेंसे समान आशयवाले योग्य प्रतिसाद निम्नांकित है -

सारणी क्र. IV.६.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारियाँ क्या है, इसके बारे में मार्गदर्शन नही मिलता।
२.	राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएँ समझ लेने के लिए कोई किताब पढने नहीं मिलती।
३.	संपर्क भाषा के रुप में हिंदी की जिम्मेदारियाँ मालूम तो है, परंतु अपेक्षाएँ क्या है, कुछ समझ में नही आता, न मार्गदर्शन मिलता है।
४.	पाठ्यक्रम द्वारा जीवनावश्यक ज्ञान नही मिलता।

उपर्युक्त प्रतिसादों में से क्र. १ व ४ के छात्रशिक्षक को मार्गदर्शन का अभाव प्रतीत होने से उदासीनतावश प्रतिसाद दिया है, ऐसा लगता है। या हो सकता है, यह जिम्मेदारियाँ समझ लेने मे वे रुचि नहीं रखते। इसलिए अपना अंग निकाल लेते है। इनके लिए अध्यापक को उचित दृष्टिकोन स्थापित होने में तथा विकसित होने में प्रयास करने हों गे। क्र. २ का प्रतिसाद तथा क्र. ४ के प्रतिसाद द्वारा यह जान सकते हैं कि, राष्ट्रभाषा की जिम्मेदारियाँ समझ लेना तो दूर, इसके संबंध में यह छात्रशिक्षक अज्ञानी है। अत: इन्हें उचित प्रेरणा एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

प्रश्न क्र. ११ : " हिंदी भाषा का कुशल अध्यापक बनने हेतु क्या प्रस्तुत पाठ्यक्रम पर्याप्त है ? " इस प्रश्न का उद्देश्य हिंदी भाषाध्यापन के शिक्षक को कुशलता प्रदान करनेवाला प्रस्तुत पाठ्यक्रम है या नहीं, इसकी जाँच करना था। साथ ही अध्यापन क्षमता प्रदान करने में पाठ्यक्रमेत्तर अन्य किस कोई आशय घटक हो सकते है क्या ? इस ओर विचार करने की दिशा प्रदान करने का हेतु भी था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का जवाब छात्रशिक्षकों को " हाँ / नहीं " इन दो पर्यायों में से किसी एक पर्याय से सहमती दर्शाते हुए देना था। छात्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

<u>सारणी क्र. IV : ७</u>

<u>कुशल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम की पर्याप्तता।</u>

अनुक्रम	प्रतिसाद	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७६	९०.४७
२.	नहीं	८	९.५३

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता लगता है कि, कुशल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम पर्याप्त है कहनेवाले छात्रशिक्षकों की संख्या ९०.४७ % प्रतिशत है। तो अपर्याप्त पाठ्यक्रम कहनेवाले छात्रशिक्षकों की संख्या ९.५३ % प्रतिशत है। अर्थात सकारात्मक प्रतिसाद की तुलना में नकारात्मक प्रतिसाद बहुत ही कम है। अत: बात निर्देशनीय नही है। नकारात्मक प्रतिसाद देने वाले कम लोग है।

यहाँ पर प्रतिसादों के आधार पर कहा जा सकता है कि, प्रस्तुत पाठ्यक्रम यकीनन हिंदी भाषा का कुशल अध्यापक बनने में पर्याप्त स्वरूप का ही है।

प्रश्न क्र. ११.१ : " अगर आप के मत से पाठ्यक्रम अपर्याप्त है, तो उस में कौन से अन्य घटकों को समाबेशित किया जा सकता है ?" प्रस्तुत प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, अनुभव संपन्न छात्रशिक्षकों द्वारा अन्य आशय घटकों को जान लेना जिनका समावेश प्रचलित पाठ्यक्रम नहीं है। यह प्रश्न ११ का ही उत्तर भाग है। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न को प्रतिसाद सिर्फ चार छात्रशिक्षकों ने दिया है। अर्थात ४.७६ % प्रतिशत प्रतिसाद है, जो बात निर्देशनीय है भी नही, चूँकि यह सिर्फ व्यक्तिगत मत मात्र है। इस प्रश्न के प्रतिसाद में कोई ठोस पाठ्यघटक तो नही प्राप्त हुए बल्कि सिर्फ प्रतिसाद रूप में सूचनाएँ दी गयी है, जो छात्राध्यापको की शब्दों में निम्नांकित दिये है -

तारणी क्र. IV.७.अ

अनुक्रम	सूचनाएँ
१.	बी.ए. तक अध्ययनित एकाध हिंदी साहित्य का अध्ययन घटक हो।
२.	व्याकरण अध्ययन का संपूर्ण पाठ्यघटक हो।
३.	लैंगिक शिक्षा का अध्ययन घटक हो।
४.	देवनागरी भाषा के संबंध में घटक हो।

उपर्युक्त तारणी के प्रतिसादों के संदर्भ में तारणी क्र.T .३.ब तारणी के आधार पर किया गया अन्वयार्थ परस्पर संबंधित है। अत: उसकी पुनरुक्ति यहाँ उचित न होगी।

प्रश्न क्र. ११.२ : " इन्हीं घटकों को आप क्यों समावेशित करना चाहते है और इनकी आवश्यकता क्यों लगती है ? " यह प्रश्न ११.२ से संबंध रखता है। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, छात्रशिक्षकों द्वारा सूचित किये पाठ्य घटक को वे क्यों प्रधानता देते है ? तथा उनकी आवश्यकता एवं महत्व कैसे है ? इसके बारे में जाँच पडताल करना था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न को प्रतिसाद ४.७६ % प्रतिशत मिला है। करीबन

सभी छात्रशिक्षकों ने निम्नांकित प्रकार से प्रतिसाद दिया है -

सारणी क्र. IV .७.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	बी.ए. तक पठित साहित्य के अध्ययन का एकाध पाठ्यघटक इसलिए हो ताकि, उसे हमने पूर्व अध्यापित किया है, अपितु उच्च माध्यमिक स्तर पर उनका अध्ययन कैसे हो, इसके बारे में जानकारी मिले।
२.	व्याकरण अध्यापन का संपूर्ण एक पाठ्यघटक हो ताकि, इसके पाठ्य-घटक के अध्यापन दिक्कत महसूस होती है। इसलिए उसकी आवश्यकता हो।
३.	लैंगिक शिक्षा की आवश्यकता इसीलिए हो चूँकि, पौगंडावस्था के छात्रों की बर्तनी को समझ सके तथा उपचारात्मक प्रयत्न कर सके ।

इनके अलावा अन्य प्रतिसाद का सारांश यही निकलता है, "हमारे मत से कुशल अध्यापक के लिए यह जरूरी है"। यह प्रतिसाद वैयक्तिक मता - नुसार है। अत: बात निर्देशनीय नहीं है क्योंकि, प्रशिक्षण में हम हिंदी साहित्य का अध्ययन अपेक्षित रखते हैं न की संपूर्ण व्याकरण अध्ययन ही अपेक्षित रखते है। इनका अध्ययन तो कक्षा पाँचवी से लेकर बी.ए.तक वे करते आए होते है। साथ ही " लैंगिक शिक्षा तथा पौगंडावस्था की समस्याओं

के लिए मानसशास्त्र का वे अध्ययन करते है। अत: उसका अध्ययन अध्यापन विधि में आवश्यक नहीं।

कुल मिलाकर यह प्रतिसाद एकांगी स्वरूप होने से खास महत्वपूर्ण है।

४.३.२ प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

इसके बाद के प्रश्न प्रत्यक्ष कार्य एवं उसकी कार्यनीति के संबंध में थे। अर्थात प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता, प्रत्यक्ष कार्य के लिए निर्धारित उद्देश्यों की सफलता तथा कुशलता प्रदान करने में पर्याप्तता एवं मूल्यांकन पद्धति से संबंधित प्रश्न पूछे गये थे। इनका विवेचन निम्नांकित है।

प्रश्न क्र. १२ : " प्रचलित हिंदी पाठ्यक्रम के निर्धारित प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता एक सफल अध्यापक बनने में कितने हदतक है ? " इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, पाठ्यक्रम द्वारा परिचालित प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता हिंदी भाषाध्यापक बनने में कितने हदतक है, इसकी जाँच पडताल करना। प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इसका प्रतिसाद छात्राध्यापकों को पाँच पर्यायों में से किसी एक से सहमती दर्शाते हुए करना था। यह पाँच पर्याय थे -

१] अत्याधिक उपयुक्त।
२] उपयुक्त।
३] यथा तथा।
४] अल्प स्वरूप।
५] अत्यल्प स्वरूप।

इन्ही में से किसी एक पर्याय पर [✓] यह चिन्ह छात्रों को अंकित करना था। छात्रशिक्षकों द्वारा दिया प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ८

सफल अध्यापक बननेमें प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्याधिक उपयुक्त	२०	२३.८०
२.	उपयुक्त	४१	४८.८०
३.	यथा तथा	१६	१९.०४
४.	अल्प स्वरूप	७	८.३६
५.	अत्यल्प स्वरूप	–	–

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, " अत्याधिक उपयुक्त " के पक्ष में २३.८० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "उपयुक्त" के पक्ष मे. ४८.८० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "यथा तथा" के पक्ष में १९.०४ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "अल्प स्वरूप" के पक्ष में ८.३६ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। तथा "अत्यल्प स्वरूप" के पक्ष में एक भी प्रतिसाद नहीं आया है।

ज्यादा से ज्यादा प्रतिसाद पाठ्यक्रम के "उपयुक्त है" के पक्ष में तथा "अत्याधिक उपयुक्त" के पक्ष में प्रतिसादों को मिलाकर कुल उपयुक्तता के पक्ष में ७२.६० % प्रतिशत मत जाते है। जो "अल्प उपयुक्तता" तथा "यथा तथा" पक्ष में जानेवाले कुल २७.४० % प्रतिशत मत से ज्यादा है। अत: इनके आधार पर कहा जा सकता है कि, पाठ्यक्रम के प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता के संदर्भ में कोई शक् नहीं।

प्रश्न क्र. १३ : " अगर आप के मत से प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य अनुपयुक्त है तो उसके कुछ कारण नीचे दिये है, उनमें से आप जिनसे सहमत हो उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए -" यह था। यह प्रश्न संमिश्र हुए भी बंधित है। इस प्रश्न का उत्तर भाग मात्र मुक्त प्रतिसाद प्राप्त करने हेतु रचित है। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, छात्रशिक्षकों का प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के पक्ष में अगर कोई मत हो उन्हे प्राप्त करना तथा नकारात्मक विचारदिशा है तो उसकी जाँच पडताल करना। इसके लिए प्रश्न के नीचे छ:[६] कारण दिये थे। इनको मिला हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

सारणी क्र. IV.९

प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के पक्ष में कारणों की सारणी

तथा प्राप्त प्रतिसाद

अनुक्रम	कारण	संख्या	प्रतिशत
१.	प्रत्यक्ष कार्यद्वारा जो भी हम सीखते है, उसका प्रत्यक्ष अध्यापन में आचरण नहीं कर सकते।	१६	१९.०४

सारणी क्र. IV . ९ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	कारण	संख्या	प्रतिशत
२.	समय का अभाव होने से अध्ययन घटकों का आचरण करना असंभव है।	१३	१५.४७
३.	पाठ्यक्रम का एक आवश्यक भाग की पूर्तता करना मानकर ही प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाएँ अध्यापक महाविद्यालयों में संपन्न होती है।	१३	१५.४७
४.	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं से अर्जित ज्ञान का उपयोग प्रत्यक्ष अध्यापन में कैसे किया जाये, इस संबंध में मार्गदर्शन नहीं मिलता।	१७	२०.२३
५.	प्रत्यक्ष कार्य की कोई आवश्यकता ही नही, चूँकि "अध्यापन एक कला है"	११	१३.०९
६.	भविष्यकाल में अध्यापक व्यवसाय के लिए अपर्याप्त स्वरूप का ज्ञान हमें प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य कार्य-शालाओं से मिलता है।	१५	१७.८५

उपर्युक्त सारणी में विधान क्र. १ को १९.०४ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रशिक्षणकाल में अर्जित ज्ञान, कौशल का उपयोजन आचरण में नही लाते, यह महज एक धारणा है। तथा इसके पीछे व्यक्तिगत कारण

होते है। क्योंकि प्रत्यक्ष कार्य का आयोजन अध्यापन क्षमताएँ प्रदान करने के लिए ही होता है।

विधान क्र. २ को १५.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अध्ययन घटकों को प्राप्त करना एवं उसपर प्रभुता पाना अभ्यासांती सफलता से आता है। अत: समय का अभाव से अध्ययन घटकों के आचरण से संबंध में दिखानेवाले छात्रशिक्षक नाकारावृति के है। अनुसंधानकर्ता को इसीलिए लगता है कि, अध्यापक प्रशिक्षण के प्रवेश पाने के लिए ही अभिवृति कसौटियाँ देनी चाहिए।

विधान क्र. ३ को १५.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह प्रतिसाद प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति की ओर ध्यान खींचता है। इस धारणा के पीछे व्यक्तिगत परिस्थिती के कई कारण हो सकते है। छात्रशिक्षकों की यह धारणा व्यक्तिगत विचारसे बनी है। क्योंकि, महाविद्यालय के अध्यापकों ने सभी प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यशालाओं की कार्यनीति टाईम टेबल के आधार पर होने की बात बताई है।

विधान क्र. ४ को २०.२३ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अध्यापकों द्वारा हर प्रकार से मार्गदर्शन दिया जाता ही है, किन्तु आकलन शक्ती या क्षमता कम होने के कारण हो सकता है, छात्रों ने यह प्रतिसाद दिया हो। अत: अध्यापकों को व्यक्तिगत रूप से ऐसे छात्रों को ज्यादा मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है।

विधान क्र. ५ को १३.०९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्वारा छात्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रात्यक्षिक कार्य के प्रति

संपूर्णतः नाकारावृति दिखाई देती है। प्रशिक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोन, नवीनता, प्रशिक्षण के प्रति उदासीनता आदि वृति इस द्वारा प्रकट होती है। इसीलिए अनुसंधानकर्ता को यही लगता है कि, योग्य अभिवृति रखने वाले लोगों को ही इस अध्यापक व्यवसाय में लाना चाहिए। इसलिए प्रवेश देते वक्त अभिवृति कसौटियाँ दे कर ही प्रवेश देना चाहिए।

विधान क्र. ६ को १७.८५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अध्यापक व्यवसाय के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशलों को प्रयत्न करने में प्रस्तुत पाठ्यक्रम की उपयुक्तता पर्याप्तता के बारे में अन्य प्रश्न के प्रतिसाद मिले है। अतः इन प्रतिसाद मिलने के पीछे व्यक्तिगत या परिस्थितिजन्य कारण हो सकते है।

प्रश्न क्र. १३.१ : " प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के संबंध में आप के मत से अन्य कारण हो तो उन्हें रिक्त स्थान में लिखिए -" यह था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के कारण छात्रों के विचार से देखना, इस प्रश्न का उद्देश्य था। प्रस्तुत प्रश्न को ११.९० % प्रतिशत प्रतिसाद मिलें हैं। समान आशयवाले प्रतिसाद छाँटकर निम्न सारणी में दिये है।

<u>सारणी क्र. IV.९.अ</u>

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्य कैसे उपयुक्त है, इसके बारें में कुछ हमे समझाया नही जाता।
२.	प्रत्यक्ष कार्य क्यों करना है, यह समझाया नहीं जाता।
३.	

सारणी क्र. IV.९.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	प्रतिसाद
३.	समय कमी दिया जाता है, इसलिए अभ्यास होता नहीं, इससे कौशलों को अच्छे तरह से संपन्न नही कर सकते।
४.	व्यक्तिगत मार्गदर्शन बहुत कम मिलता है। इससे प्रत्यक्ष कार्य का हमें फायदा नहीं होता।
५.	प्रत्यक्ष कार्य बहुत ही क्लिष्ट है। इससे मन पर तणाव आता है। इसे अधिक सरल बनाने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त कारणों में से क्र. १ व २ के कारणों से यह प्रतित होता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता के बारे में, उद्देश्यों के बारे में छात्रशिक्षकों को स्पष्ट कल्पना नही है। अध्यापकों को यह स्पष्ट करना चाहिए। इससे प्रात्यक्षिक कार्य के प्रति उचित दृष्टि उनहें मिलेगी।

कारण ३ के बारे में "समय की कमी" के कारण अभ्यास का अवसर कम मिलता है, यह सच्ची बात है। अनुसंधानकर्ति के मत से भी प्रत्यक्ष कार्य के लिए ज्यादा समय देना चाहिए।

कारण क्र. ४ भी कारण ३ से संबंधित है। समय की कमी होने से तथा अन्य परिस्थितिजन्य कारणों से व्यक्तिगत मार्गदर्शन नही मिलता हो। लेकिन इससे प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता सिद्ध नही होती।

कारण ५ के प्रतिसादों से ऐसा प्रतित होता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति व वातावरण तणावग्रस्त होने से, उचित मार्गदर्शन न मिलने से यह मत प्रकट किया गया हो। वस्तुत: गुटकार्य में अध्यापक को मित्रतापूर्ण मार्गदर्शक की भूमिका का अवलंब करें, तो यह समस्या नही हो सकती।

उपर्युक्त सभी कारणों द्वारा छात्रशिक्षकों ने व्यक्तिगत समस्याएँ ही प्रकट की है। इससे प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता सिद्ध नहीं हो जाती।

प्रश्न क्र. १४ : " एक कुशल अध्यापक बनने में क्या प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति आप को मदद कर सकती है ? " यह था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। क्योंकि छात्रशिक्षकों को इसका उत्तर " हाँ / नहीं "में से किसी एक से सहमती दर्शाते हुए देना था। अध्यापक महाविद्यालयों मे प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति अध्यापकों को अध्यापन कौशलों की उपलब्धता करती है या नही यह पूछना इस प्रश्न का उद्देश्य था। इस प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है -

<u>सारणी क्र. IV.१०</u>

कुशल अध्यापक बनने में प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति की मदद

संबंधी प्रतिसाद

अनुक्रम	श्रेणी	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७८	९२.८५
२.	नहीं	६	७.१५

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, " हाँ " के पक्ष में ९२.८५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। तथा " नही " के पक्ष में ७.१५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे कुशल अध्यापक बनने में प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति से मदद मिलती है, यह यकीनन कहा जा सकता है क्योंकि, " नही " के पक्ष में बहुत ही कम प्रतिसाद मिला है। यह प्रतिसाद १० % प्रतिशत से भी कम होने से निर्देशनीय नहीं है।

प्रश्न क्र. १४.१ : " अगर मदद कर सकती है तो कितने हदतक ? " यह था। यह बद्ध प्रश्न था। इसमें पाँच पर्याय दिये थे। तथा इन्हीं में से एक से सहमती दर्शाते हुए छात्रशिक्षकों को उत्तर देना था। यह पाँच पर्याय थे।

१] अत्यधिक
२] अधिक
३] यथा तथा
४] अल्प
५] अत्यल्प

इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, अध्यापक महाविद्यालयों में प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति कितने हदतक छात्रशिक्षकों को कुशल अध्यापक बनने में सहायक है, इसके बारें में छात्रशिक्षकों के मत आजमाना, वृत्ति जाँच करना। प्रस्तुत प्रश्न को प्रतिसाद निम्न सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV .११

प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति से अध्यापक बनने में मदद

कितने हदतक....

अनुक्रम	श्रेणी	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक स्वरुप	२६	३०.९५
२.	अधिक स्वरुप	३४	४०.४७
३.	यथा तथा	१५	१७.८५
४.	अल्प स्वरुप	६	७.१४
५.	अत्यल्प स्वरुप	३	३.५९

उपर्युक्त सारणी देखने से समझता है कि, " मदद होती है " के पक्ष में ज्यादा मत है। "अत्यधिक स्वरुप से मदद होती है" के पक्ष में ३०.९५ % प्रतिसाद है एवं अधिक स्वरुप से मदद होती है के पक्ष में ४०.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद है। " यथा तथा मदद मिलती है " के पक्ष में १७.८५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अल्प स्वरुप मदद मिलती है के पक्ष में ७.१४ % तो " अत्यल्प स्वरुप मदद मिलती है " के पक्ष में ३.५९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिले है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो औसतन ७० % प्रतिशत प्रतिसादों द्वारा जाहीर होता है कि, कार्यनीति का योगदान कुशल अध्यापक बनने में है। किन्तु तटस्थ स्वरूप एवं नकारात्मक प्रतिसाद के पक्ष में भी औसतन २५ % प्रतिशत से अधिक एवं ३० % प्रतिशत से कम है। कार्यनीति के संबंध में प्रतिकूल दृष्टिकोन क्यों और कैसे है ? इसके कारण ढूंढने के लिए आगे के प्रश्न रचे थे।

प्रश्न क्र. १५ : " आप के महाविद्यालय में पाठ्यक्रम के प्रत्येक प्रत्यक्ष कार्य को क्या अच्छे ढंग से कार्यान्वित किया जाता है ? " यह था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। क्योंकि इस प्रश्न के उत्तर " हाँ / नही " के से किसी एक से सहमती दर्शाते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, महाविद्यालयों मे आयोजित कार्यनीति के बारे में मत आजमाना। इस प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्न सारणी में दिया है।

<u>सारणी क्र. IV .१२</u>

कार्यनीति के कार्यान्वितीकरण के बारे में मत

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत %
१.	हाँ	६८	८०.९५
२.	नही	१६	१९.०५

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, ८०.९५ % प्रतिशत प्रतिसादों के माध्यम से यह कहना गलत न होगा कि, अध्यापक महाविद्यालयों मे कार्यनीति उचित स्वरूप की होती है।

कार्यनीति अच्छे ढंग से नही होती के पक्ष मे १९.०५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। कार्यनीति अच्छे ढंग से कार्यान्वित क्यों नही होती, होगी इसके कारण ढूँढने के लिए आगे का प्रश्न है। अनुचित कार्यनीति के पक्ष में मत देनेवालों के कई कारण हो सकते है, जिसके पीछे व्यक्तिगत समस्याएँ भी हो सकती है।

प्रश्न क्र. १६ : " आप के मत से प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति अच्छे ढंग से न होती हो तो उसके क्या कारण है ? नीचे ऐसे कई कारण दिये है। उनमें से आप जिनसे सहमत है, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित किजिए।" प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति ठीक तरह न होने के कारण क्या है, उन्हे जानना तथा छात्रों का इसके प्रति मन आजमाना। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

<u>सारणी क्र. IV .१३</u>

प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति अच्छे ढंग से न होने के कारण

संबंधित प्रतिसाद..

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	प्रत्यक्ष कार्य के लिए दिया गया समय अपर्याप्त है।	१७	२०.२३

सारणी क्र. IV .१३ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
२.	प्रत्यक्ष कार्य के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध नही है।	१४	१६.६६
३.	प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी है।	१२	१४.२८
४.	अध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन नहीं मिलता।	९	१०.७१
५.	पाठ्यक्रम का आवश्यक भाग मानकर इसे पूरा किया जाता है।	२१	२५.००
६.	प्रत्यक्ष कार्य करते समय सिर्फ उसे पूरा करना तथा संस्मरण [रिपोर्ट] लिखना ही आवश्यक माना जाता है। छात्रशिक्षकों मे कौनसे परिवर्तन हुए इसका लेखा-जोखा नही किया जाता।	२९	३४.५२
७.	अध्यापकों का तथा छात्रशिक्षकों का प्रत्यक्ष कार्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोन होता है।	१६	१९.०४

उपर्युक्त सारणी देखने से यह पता चलता है कि, विधान क्र. १ को २०.२३ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अत: ऐसा लगता है कि, सभी प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं के समय के संबंधित विचार होना चाहिए। इसकी

अवधि बढा देनी चाहिए।

विधान क्र. २ को १६.६६ ४ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशाला के लिए ज्यादा कुछ साधनों की जरुरत ही नही होती। इससे बिना वजह छात्रों की नाकाराबृति जाहीर है।

विधान क्र. ३ को १४.२० ४ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे जाहीर है कि, अध्यापक महाविद्यालयों मे अध्यापक की शैक्षिक पात्रता एम.ए. [ब +] एम.एड. [ब +] रखी गयी है। यह काफी नहीं बल्कि प्रत्येक प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति कैसे हो इसके बारे कार्यशालाओं द्वारा उन्हें अनुभव देने की आवश्यकता है।

विधान क्र. ४ को १०.७१ ४ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह विधान उपर्युक्त क्र. ३ के विधान से संबंध भी रखता था। इससे जाहीर है कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं में व्यक्तिगत मार्गदर्शन कहीं कही दिया न जाता हो। इसके परिस्थितिजन्य व्यक्तिगत कारण हो सकते है।

विधान क्र. ५ को २५ ४ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे लगता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की ओर देखने का दृष्टिकोन उदासीन स्वरुप का है। सिर्फ उसे पूरा करना तथा अंतर्गत अंक का " रिकॉर्ड " भरना ही ठीक माना जाता है।

विधान क्र. ६ को ३४.५२ ४ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह विधान उपर्युक्त विधान क्र. ७ का ही विस्तुत रुप था। इसे ज्यादा प्रतिसाद

मिलने से यह बात पर जरूर विचार करना चाहिए।, कि सिर्फ संस्मरण लेखन से ही तथा विद्यापीठ द्वारा पारित पाठ्यक्रम पुस्तिका के मार्गदर्शित तरीके से मूल्यमापन काफी नहीं। किन्तु छात्रशिक्षकों के अभिवृति, वर्तन, कौशलो, क्षमताओं में परिवर्तन की जाँच करना एवं इसी के आधार पर प्रत्याभरण देने की प्रक्रिया होनी चाहिए।

विधान क्र. ७ को १९.०४ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रात्यक्षिक कार्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोन यह व्यक्तिगत स्वरूप की समस्या है। अत: यह बदलने के लिए विचार होना चाहिए। इसीलिए शिक्षक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोन का मापन अभिवृति कसौटी द्वारा कर ही इस पाठ्य - क्रम को प्रवेश देना आवश्यक लगता है।

प्रश्न क्र. १६.१ : " इसके अलावा भी कोई अन्य कारण हो तो उन्हे रिक्त स्थान में लिखिए -" यह प्रश्न क्र. १६ का ही उत्तर भाग था। इसका उद्देश्य यही था कि, छात्रशिक्षकों को कार्यनीति के संबंध में अपने मत प्रकट करने का अवसर मिले। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इसे मिला हुआ प्रतिसाद ११.९० % प्रतिशत है। इसमें से समान आशयवाले महत्वपूर्ण प्रतिसाद निम्नांकित है।

<u>सारणी क्र. IV .१३.अ</u>

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्यशाला में कार्य के गुण वहीं तुरंत देना चाहिए न कि, बाद में अहवाल देने पर।

सारणी क्र. IV .१३.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	प्रतिसाद
२.	अभ्यास [सराव] के बाद तुरंत मूल्यांकन नहीं किया जाता।
३.	छात्रशिक्षक अध्यापक संबंध अच्छे होते हो ऐसा नहीं इसका परिणाम प्रात्यक्षिक कार्य करते वक्त होता है। पक्षपात किया जाता है।
४.	अनियमित छात्रशिक्षकों को भी गुण देने से परिश्रम करनेवाले नियमित छात्रशिक्षक पर अन्याय होता है।
५.	प्रत्यक्ष कार्य तज्ञ अध्यापकों द्वारा नहीं लिया जाये।
६.	प्रत्यक्ष कार्यशालाओं में और ३-५ दिन की बढत देनी चाहिए क्योंकि समय कम है।

उपर्युक्त प्रतिसादो में से पहले ४ प्रतिसाद क्र. १ से ४ तक के कार्यनीति अंतर्गत मूल्यांकन से संबंधित है। अत: यह जरूरी है कि, अंतर्गत मूल्यमापन पध्दति के परिवर्तन संबंधी विचार हो।

प्रतिसाद क्र. ५ को देखते हुए यह कहना पडता है कि, तज्ञ की भूमिका निभाने के लिए हिंदी अध्यापन विधि के अध्यापकों को स्व क्षमताएँ बढानी चाहिए।

प्रतिसाद क्र. ६ का प्रतिसाद समय की कमी को सामने लाता है। अत: कार्यशालाओं का अवधि बढाना चाहिए। जिससे छात्रशिक्षकों को

अधिक अभ्यास का अबसर मिले।

प्रश्न क्र. १७ : " प्रत्यक्ष कार्य की कारबाई अच्छे प्रकार से होने के लिए किन बातों की आवश्यकता है ? इसके संबंध में कई सूचनाएँ निम्नांकित है, उनमें से जिनसे आप सहमत हो, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए -" यह प्रश्न था। यह बद्ध स्वरूप का प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति अच्छे ढंग से होने के लिए छात्रशिक्षकों से मत प्राप्त करना एवं इस दिशा में सोचने के लिए उन्हें दिशा देना। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV .१४

प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति अच्छे ढंग से होने के पक्ष में प्रतिसाद।

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	बी.एड. का प्रशिक्षण कालावधि दो वर्ष का किया जाये।	५२	६१.९०
२.	प्रत्यक्ष कार्य की पूर्तता के लिए महाविद्यालयों मे उचित समय, जगह साधनों की उपलब्धता हो।	५५	६५.४७
३.	प्रत्यक्ष कार्य की कारबाई प्रशिक्षित सक्षम अध्यापक द्वारा ही हो।	५६	६८.६६
४.			

सारणी क्र. IV .१४ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
४.	प्रत्यक्ष अध्यापन में, प्रत्यक्ष कार्य द्वारा संपन्न घटकों ज्ञान, कौशल कैसे आचरण में लाया जाये इसके बारे में मार्गदर्शन तथा अभ्यास दिया जाये।	४८	५७.१४
५.	प्रत्येक प्रत्यक्ष कार्य संपन्न होते ही छात्रशिक्षकों में अपेक्षित परिवर्तन का मूल्यांकन होना जरूरी है।	६३	७५.००

उपर्युक्त सारणी द्वारा प्राप्त जानकारी का अन्वयार्थ निम्नांकित है।

विधान क्र. १ को ६१.९० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह देखते हुए निश्चित रूप से कहना गलत न होगा कि, बी.एड. का प्रशिक्षण कालावधि दो वर्ष का किया जाये।

विधान क्र. २ को ६५.४७ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं का समय बढा देना चाहिए तथा जगह, साधनों के बारे में शिवाजी विद्यापीठ द्वारा एक परीक्षण - सर्वेक्षण समिति गठित होना आवश्यक है।

बिधान क्र. ३ को ६८.६६ ％ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अत: यह कहना गलत न होगा की प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति के आवश्यक क्षमताओं को संपन्न करना चाहिए। इसमें कार्यनीति के उद्देश्यों के प्रति दायित्व, कार्यनीति के समय कार्यशालाओं में छात्रों से निष्पक्षता से बर्तन एवं मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता लाना इ. अपेक्षित है।

बिधान क्र. ४ को ५७.१४ ％ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अत: अध्यापकों की यह जिम्मेदारी कि प्रत्यक्ष कार्यशालाओं में अर्जित ज्ञान, कौशल्य का उपयोजन कैसे करें इसका व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं प्रयास जरूरी है।

बिधान क्र. ५ को सबसे ज्यादा ७५ ％ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे प्रत्यक्ष कार्य कार्यशालाओं में अपेक्षित परिवर्तन का मूल्यांकन होना जरूरी है तथा उन्हें प्रत्याभरण देना एवं अपेक्षित बर्तन सफल होने से प्रबलन देना भी आवश्यक है। इसके बारे में अध्यापक को अपनी क्षमताओं का बिकास करना आवश्यक है।

प्रश्न क्र. १७.१ : " अगर इसके अलावा भी अन्य सूचनाएँ हो तो नीचे लिखिए " यह था। यह प्रश्न क्र. १७ का ही उत्तर भाग था। यह मुक्त प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रत्यक्ष कार्य कार्यनीति को अलग तरह से आयोजित करने हेतु कुछ अच्छी सूचनाएँ प्राप्त करें। प्रस्तुत प्रश्न को कुल १७ छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है। अत: २०.२३ ％ प्रतिशत प्रतिसाद प्राप्त हुआ है। समान आशयवाले महत्त्वपूर्ण लगे प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV . १४.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	अध्यापक छात्र संबंध अच्छे रहने चाहिए।
२.	भाषा विकास, भाषा पर प्रभुत्व पाने के लिए कार्यशाला में मार्गदर्शन मिले।
३.	समय की कमी के कारण कार्यशाला को ऐसे तैसे खत्म न करे। समय ही बढाईए।
४.	अध्यापक का ही ज्ञान कम है, जिससे छात्र प्रात्यक्षिक कार्य द्वारा ज्ञान, कौशल उचित रूप से अर्जित नहीं कर सकते।
५.	तज्ञ अध्यापक न होने से प्रशिक्षण भी अयोग्य लगता है, भविष्य में इसके उपयोग नहीं होते।

उपर्युक्त प्रतिसादों मे से क्र. १ के प्रतिसाद के संबंध में लगता है कि, अध्यापकों को छात्रशिक्षक अध्यापक संबंध को लेकर सुसमायोजन, समन्वय रखना चाहिए।

क्र. २ के प्रतिसाद को देखकर यह कहना गलत न होगा कि, प्रत्येक कार्यशालाओं दरम्यान भाषा, संभाषण में जो छात्रशिक्षक दुर्बल होते है, उन्हें मार्गदर्शन करते रहना चाहिए। कार्यशालाके कार्यनीति दौरान तथा आम

समय भी अपने अध्यापन पद्धति के छात्रों से केवल हिंदी भाषा में ही संभाषण करे। छात्रों की संभाषण शक्ति बढाने हेतु उन्हें आपस में भी चर्चा, संभाषण हिंदी में ही करने को बाध्य करें।

क्र. ३ के प्रतिसाद को लेकर कह सकते है कि सुनियोजनपूर्वक कार्यनीति आवश्यक है। कुल प्रशिक्षण से संबंधित समय का विचार होना चाहिए।

क्र. ४ एवं ५ के प्रतिसाद में समानता है। अत: या तो तज्ञ अध्यापकों द्वारा ही प्रात्यक्षिक लिये जाये। या हर साल बाद प्रशिक्षण कार्यनीति संदर्भ में अध्यापकों से अध्यापक महाविद्यालय में रिपोर्ट देने की आयोजना हो तथा तज्ञ अध्यापकों द्वारा उन्हें उद्बोधन करे। अध्यापकों को नौकरी में रखते समय भी उसके इन सभी कौशलों का, ज्ञान को कसौटी द्वारा परखना जरूरी है। अत: नौकरी के इंटरव्यू दरम्यान समय उन्हें लिखित स्वरूप की एक कसौटी होनी चाहिए।

प्रश्न क्र. १८ : " प्रत्यक्ष कार्य द्वारा हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों की सफलता क्या पर्याप्त स्वरूप से होती है ? " यह था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इसका उत्तर छात्रशिक्षकों को "हाँ नहीं में से एक से सहमती दर्शाते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य था कि, पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्य प्रत्यक्ष कार्य द्वारा होते है या नहीं, इसकी जाँच करना था। इस प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित है।

<u>सारणी क्र. IV .१५</u>

पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को सफल करने में प्रात्यक्षिक कार्य से संबंधित प्रतिसाद

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७४	८८.०९
२.	नहीं	१०	११.१९

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, "हाँ" के पक्ष में ८८.०९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है तथा "नही" के पक्ष में ११.१९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "नही" की तुलना में "हाँ" के पक्ष में प्रतिसाद ज्यादा है। अत: यकीनन कहा जा सकता है कि, पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्य सफल करने में प्रत्यक्ष कार्य अपना योगदान रखता है।

प्रश्न क्र. १८.१ : " अगर आप के मत से सफलता होती है तो कितने हदतक होती है ? कृपया जिस पर्याय से आप सहमत है, उस पर [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए" यह था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रत्यक्ष कार्यद्वारा हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम के उद्देश्य सफल होते है, तो कितने हदतक होते है, इसकी जाँच करना था। इसका उत्तर छात्रशिक्षकों की पाँच पर्यायों में से किसी एक को सहमती दर्शाते हुए देना था। यह पर्याय थे।

१] अत्यधिक स्वरूप से

२] अधिक स्वरूप से

३] यथा तथा

४] अल्प स्वरूपसे

५] अत्यल्प स्वरूप से

प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

<u>सारणी क्र. IV .१६</u>

पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की सफलता प्रत्यक्ष कार्य द्वारा कितने हदतक..

अनुक्रम	श्रेणी	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक स्वरूप	७	८.३३
२.	अधिक स्वरूप	४४	५२.३८
३.	यथा तथा	१८	२१.४२
४.	अल्प स्वरूप	१२	१४.२८
५.	अत्यल्प स्वरूप	३	३.५९

उपर्युक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि, "अत्यधिक" के पक्ष में ८.३३ % प्रतिशत, "अधिक" के पक्ष में ५२.३८ % प्रतिशत, "यथा तथा" के पक्ष में २१.४२ % प्रतिशत, "अल्प स्वरूप" के पक्ष में १४.२८ % प्रतिशत, "अत्यल्प स्वरूप" के पक्ष में ३.५९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिले है। इसमें सफलता

के पक्ष में करीबन ६० % प्रतिशत मत जाते है, जो असंदिग्धता एवं असफलता के प्रतिसादों की तुलना में ज्यादा है। अत: यकीनन कहा जा सकता है कि, प्रत्यक्ष कार्यद्बारा पाठ्यक्रम मे निर्धारित उद्देश्य सफल होते है। क्र. ३,४,५ के श्रेणी में प्रतिसाद देनेवालों के लिए अगले प्रश्न में मत प्रकट करने का अवसर दिया है।

प्रश्न क्र. १९ : " आप के मतानुसार प्रत्यक्ष कार्य की प्रचलित कार्यान्विती द्बारा उद्देश्य असफल होने हो तो उसके कौन से कारण हो सकते है ? [कृपया निम्नांकित कारणों में से जिनसे आप सहमत हो उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए -]" यह प्रश्न था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, पाठ्यक्रम उद्देश्यों के असफलता कार्यान्विति द्बारा अगर होती है, तो उसके कारण जानना था। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV.१७

प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति से उद्देश्य असफल होने के कारण..

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	प्रत्यक्ष कार्यद्बारा कौन से उद्देश्य सफल होते है, इसके बारे में जानकारी नहीं है।	२३	२७.३८
२.	किस उद्देश्य की सफलता अचूकता से कौन से प्रत्यक्ष कार्यद्बारा होती है, इसके बारें में अध्यापकों से मार्गदर्शन नहीं मिलता।	१५	१७.८५

सारणी क्र. IV.१७ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
३.	प्रत्यक्ष कार्यद्वारा कुछ हदतक अध्यापन क्षमताएँ तो आती है, लेकिन कौन से उद्देश्य पूर्ण होते है, इसके बारें में कहा नहीं जा सकता।	२४	२८.५१
४.	प्रत्यक्ष कार्य घटक की आवश्यक स्वरूप परिपूर्ति यही दृष्टिकोन अध्यापक तथा छात्रशिक्षकों का होने से उद्देश्यों के सफलता के संबंध में विचार नहीं होता।	२६	३०.९५

उपर्युक्त सारणी में विधान क्र. १ को २७.३८ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे छात्र प्रत्यक्ष कार्य के उद्देश्यों के प्रति उदासीन दिखाई देते है।

विधान क्र. २ को १७.८५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। हो न हो बहुत कम प्रतिसाद होते हुए भी यह सच्चा मत है। क्योंकि किन उद्देश्यों को लेकर कौन सा प्रात्यक्षिक कार्य करवाया जायेगा, इसके बारे में गहरी, अचूक जानकारी नही दी जाती। अत: यह जानकारी देनी चाहिए।

विधान क्र. ३ को २८.५१ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्वारा छात्रशिक्षक की व्यक्तिगत समस्या होने से है या तो फिर उद्देश्यों के प्रति जागृत नहीं है। यही कहना चाहिए।

विधान क्र. ४ को ३०.९५ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। सब से ज्यादा प्रतिसाद मिलने से इसका बाकई दृष्टिकोन बदलने की आवश्यकता प्रस्तुत विधान से संबंधित है। अध्यापकों का अपना व्यावसायिक, नैतिक उत्तरदायित्व समझाना चाहिए और कार्य करना चाहिए।

प्रश्न क्र. १९.१ : " अगर इसके अलावा भी अन्य कारण हो तो उन्हें नीचे लिखिए -" यह था। यह प्रश्न क्र. १९ का ही उत्तरभाग था और मुक्त स्वरूप प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्य-नीति द्वारा उद्देश्य के असफल होने के अन्य कारणों को जानना। इस प्रश्न को सिर्फ ७.१४ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV.१७.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्य से कैसा फायदा हमें होता है या हमें किसलिए सीखना चाहिए, यह बताया ही नहीं जाता।
२.	प्रत्यक्ष कार्य के कार्यशाला में अभ्यास, समय कम होने से नहीं हो पाता। इसलिए उद्देश्य असफल होते है।
३.	उद्दश्यों को समझाते ही नहीं सिर्फ कार्य पूर्ति के पीछे लगे रहते है और हमें भी जल्दी जल्दी काम निपटाने को कहते है। तो इससे उद्देश्य कैसे सफल होंगे ?

उपर्युक्त तीनों प्रतिसादों का सुप्त अर्थ सारणी क्र. १७ के विधानों में है। वस्तुत: यह प्रतिसाद बहुत ही कम मात्रा में मिलने से खास निर्देशानिय नहीं है।

प्रश्न क्र. २० : " प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य एवं उसकी कार्यनीति जिस पद्धति से संपन्न होती है, क्या वह एक कुशल हिंदी भाषाध्यापक बनने के लिए वह पर्याप्त है ?" प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। छात्रशिक्षकों को "हाँ / नही " में से किसी एक से सहमति दर्शाकर इसका उत्तर देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य यही था कि, कार्यनीति का योगदान कुशल अध्यापक बननें में है या नहीं इसकी जाँच करना था। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV .१८

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	६५	७७.३८
२.	नहीं	१९	२२.६२

उपर्युक्त सारणी से पता चलता है कि, हाँ के पक्ष में ७७.३८ % प्रतिशत प्रतिसाद है तथा "नही" के पक्ष में. २२.६२ % प्रतिशत प्रतिसाद है। "नही" के पक्ष के प्रतिसादों की तुलना में "हाँ" पक्ष के प्रतिसाद ज्यादा है। अत: यकीनन

यह कहा जा सकता है, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति यकीनन हिंदी भाषा का कुशल अध्यापक बननेंनमें पर्याप्त है। यद्यपि अल्प मात्रा में त्रुटियाँ भी है।

प्रश्न क्र. २०.१ : " उपर्युक्त विषय के संबंध में अपने सुझाव नीचे लिखिए -" यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य था कि प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति द्वारा कुशल अध्यापक बनने में प्रत्यक्ष कार्य का योगदान है या नहीं के संदर्भ में मतों की जाँच पडताल करना तथा सकारात्मक नकारात्मक सुझाव प्राप्त करना था। इस प्रश्न को कुल २० छात्राध्यापकों ने, अर्थात २३.८० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्राप्त प्रतिसादों में से समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV.१८.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं की अवधि बढा दी जाये, जिससे ज्यादा अभ्यास का अवसर मिलेगा और अध्यापन संबंध में कुशलता, प्रभुता आती रहेगी।
२.	विविध उद्देश्यों का गहराई से अध्ययन करवा लेना चाहिए, इससे कुशल अध्यापक बनने में मदद मिलेगी।
३.	अध्यापन कौशलों की संख्या बढा दी जाये एवं सूक्ष्म अध्यापन कार्य-शाला की अवधि बढा दी जाये।

सारणी क्र. IV.१८.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	प्रतिसाद
४.	विविध कक्षा के छात्रों का भाषा अध्ययन की गलती का अभ्यास करना आवश्यक प्रत्यक्ष कार्य करे।
५.	अध्यापकों को छात्रशिक्षकों से संबंध टूटे से होते है, इससे प्रात्यक्षिक कार्य की कार्यनीति दौरान व्यक्तिगत मार्गदर्शन नहीं मिलता, इससे जानकारी नही मिलती एवं छात्रशिक्षक निष्क्रीय हो जाते है।

इसमें से प्रतिसाद क्र. १ और क्र. ३ में प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशाला का अवधि बढा देने की सूचनाएँ ठीक ही लगती है। अध्यापन कौशलों को बढाने से कोई फायदा नहीं है। जितने कौशल है वे मूलभूत अध्यापन क्षमताएँ लाने में उपयुक्त है। अत: समय को बढाने के पक्ष में अनुसंधानर्ति इसलिए है क्यों कि, सूक्ष्माध्यापन के हो अभ्यास चक्र में छात्रशिक्षक प्रभुता नही पा सकते। इसीतरह अन्य कार्यशालाओं के लिए भी निर्धारित समय कम ही है।

प्रतिसाद क्र. २ के संबंध में कहा जा सकता है कि, बी.एड. में आनेवाले छात्र परीपक्व होते है, उन्हें उद्देश्यों के प्रति जागृत किया गया तो वे खुद ही इसका गहराई से अध्ययन कर सकते है। अध्यापक ने सिर्फ प्रेरणा, मार्गदर्शन देना है।

प्रतिसाद क्र. ४ के संबंध में कहना गलत नहीं कि, सुझाया गया प्रत्यक्ष

कार्य विषय पेपर में है, वे उसे प्रस्तुत कर सकते है। सिर्फ अध्यापक का मार्गदर्शन लेना चाहिए।

प्रतिसाद क्र. ५ एक व्यक्तिगत समस्या है। अनुसंधानकर्ता ने कोल्हापुर जिले के सभी अध्यापक महाविद्यालय के अध्यापक से साक्षात्कार एवं भेटवार्ता की है, उनमें से कटकर रहनेवाला कोई अध्यापक नही था। यह व्यक्तिगत समस्या होगी।

प्रश्न क्र. २१ : " प्रत्यक्ष कार्य का मापन करने की मूल्यांकन प्रणाली अर्थात प्रत्यक्ष कार्य को गुणदान को पद्धति क्या आप के मत से योग्य है ?" यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, छात्रशिक्षकों से मूल्यांकन प्रणाली के योग्य / अयोग्य के संबंध में मत आजमाना। प्रस्तुत प्रश्न का छात्रशिक्षकों को " हाँ / नहीं " में से किसी एक पर्याय से सहमती दर्शाते हुए देना था। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित है।

<u>सारणी क्र. IV.१८.I</u>

मूल्यांकन प्रणाली की योग्यता / अयोग्यता के संबंध में प्रतिसाद

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	७१	८४.५२
२.	नहीं	१३	१५.४८

उपर्युक्त सारणी द्वारा प्राप्त प्रतिसाद में से "हाँ" के पक्ष में ८४.५२ % प्रतिशत प्रतिसाद है। तथा "नहीं" के पक्ष में १५.४८ % प्रतिशत प्रतिसाद है। प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली योग्य है, कहनेवाले "हाँ" के पक्ष के प्रतिसाद "नहीं" पक्ष के प्रतिसाद से ज्यादा है। अत: यकीनन कहा जा सकता है कि, प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली योग्य है। किन्तु मूल्यांकन प्रक्रिया में त्रुटियाँ है।

प्रश्न क्र. २१.१ : " अगर आप के मत से प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली अयोग्य है तो अन्य कौन सी पद्धति का आप सुझाव देंगे ?" यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न को सिर्फ ७ छात्रशिक्षकों ने अर्थात ८.३३ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रश्न का उद्देश्य यही था कि, नयी मूल्यांकन प्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त करना। किन्तु एक भी ठोस मूल्यांकन पद्धति से संबंध में सुझाव या प्रस्ताव नहीं आये। इसमें से महत्वपूर्ण ३ ही सुझाव है।

सारणी क्र. IV.१८३ अ

अनुक्रम	सुझाव
१.	भाषण प्रभुता, व्याकरणिक शुद्धता के संबंध में पाठाध्यापन में मूल्यांकन हो। तथा मार्गदर्शन की पद्धति बदली जाये।
२.	छात्रशिक्षकों के बर्तनों में, अभिवृत्ति में आये परिवर्तन का मूल्यांकन हो तथा उन्हें इसे समझाया जाये।
३.	व्यक्तिगत क्षमताओं का, बुद्धी का मूल्यांकन प्रत्यक्ष कार्य में तुरंत हो।

प्रतिसाद क्र. १ व्यक्तिगत कक्षांतर्गत होने से इसे खास महत्व देने की जरूरी नहीं। क्योंकि यह मूल्यांकन सह छात्रशिक्षक भी कर सकते है।

प्रतिसाद क्र. २ व ३ के संबंध में अनुसंधानकर्ति को यह लगता है, बर्तन बदल एवं अभिवृति परिवर्तन के लिए सह पाठियों में एक कसौटी ली जाये। तथा सह पाठियों के दोष दिखाकर उन्हें आपस में प्रत्याभरण देनें की आदत डाले। एवं प्रात्यक्षिक कार्य में अध्यापक भी सहपाठियों द्वारा निर्देशित गलतियों को उचित मार्गदर्शन देकर कम करने का प्रयास करे।

प्रश्न क्र. २२ : " इस अनुसंधान विषय की दृष्टि से अन्य महत्वपूर्ण पहलू भी हो सकते है, जिनका विवेचन उपर्युक्त प्रश्न सूची में न आया हो, परंतु इस अनुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो। इस के बारे में संक्षेप में सुझाव स्वरूप कुछ लिखना चाहे तो लिखिए " यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। अनु - संधान संबंधित सुझावों को प्राप्त करना इस प्रश्न का उद्देश्य था। इस प्रश्न को ५३ छात्रशिक्षकों ने प्रतिसाद दिया है, अर्थात ६३.०९ % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इसमें से समान आशयवाले कुछ सुझाव जो अनुसंधान कार्य से संबंधित थे, उन्हें प्रकरण पाँच में सुझाव स्वरूप स्थान दिया है। असुयुक्तिक प्रतिसादों का विचार नही किया गया है।

४.४ : अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी अध्यापकों से साक्षात्कार एवं भेट- वार्ता की प्रश्नसूची तथा विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

अनुसंधानकर्ति ने १३ अध्यापक महाविद्यालयों के अध्यापकों को बार बार मिलने का प्रयास किया। इनमें से १० अध्यापकों से साक्षात्कार एवं भेट-

बातों की। इस दरम्यान अध्यापकों द्वारा ही एक प्रश्नसूची भरवा ली गयी थी। यह प्रश्नसूची दो विभागों में विभाजित थी। विभाग "अ" में सैद्धांतिक पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न थे तो विभाग "ब" में प्रात्यक्षिक कार्य से संबंधित प्रश्न थे।

इन प्रश्नावलियों का प्रश्नक्रमानुसार विश्लेषण एवं अर्थान्वयन निम्नांकित परिच्छेदों में किया गया है।

४.४.१ : सैद्धांतिक विभाग से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

अध्यापक साक्षात्कार प्रश्नसूची के विभाग "अ" में प्रश्न १ : "प्रचलित हिंदी अध्यापन विधि का सैद्धांतिक पाठ्यक्रम एक कुशल एवं सफल अध्यापक बनने हेतु आप के मत से कितने हद तक उपयुक्त है ?" इस प्रश्न का उद्देश्य, हिंदी अध्यापन विधि का सैद्धांतिक पाठ्यक्रम कुशल एवं सफल अध्यापक बनने हेतु कितना उपयुक्त है, यह जानना था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इसे पाँच पर्याय दिये थे।

१] अत्यधिक उपयुक्त
२] उपयुक्त
३] यथा तथा
४] अल्प स्वरूप
५] अत्यल्प स्वरूप

इन्हीं में से किसी एक पर्याय से सहमत होने से, उस पर्याय पर अध्यापक ने [✓] यह चिन्ह अंकित करना था। अध्यापकों ने पर्यायों का दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV. १९

हिंदी अध्यापन विधि के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की उपयुक्तता

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक उपयुक्त	१	१० %
२.	उपयुक्त	७	७० %
३.	यथा तथा	२	२० %
४.	अल्प स्वरूप	-	-
५.	अत्यल्प स्वरूप	-	-

प्रस्तुत सारणी को देखने से पता चलता है कि, अत्यधिक उपयुक्त के पक्ष में १० % प्रतिशत उपयुक्त के पक्ष में ७० % प्रतिशत और यथा तथा के पक्ष में २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिले है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के उपयुक्तता के पक्ष में ही ज्यादा प्रतिसाद जाते है। अत: यह यकीनन कहा जा सकता है कि, पाठ्यक्रम उपयुक्त है।

प्रश्न क्र. २ : " अगर आप के मत में प्रस्तुत पाठ्यक्रम अनुपयुक्त है, तो उसके पक्ष में नीचे कुछ विधान दिये गये है। इन विधानों में से जिनसे आप सहमत हो, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए -" यह प्रश्न था।

यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य अध्यापकों से पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के संदर्भ में कारणों को आजमाना था, तथा अनुपयुक्तता के कारण ढूंढने में उनकी मानसिक तैयारी करना था। अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी मे दिया है।

सारणी क्र. IV .२०

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	नीजि अध्यापन में सभी आशय घटकों की उपयुक्तता नहीं है।	२	२० %
२.	प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य में जो समस्याएँ आती है, उसके लिए सैद्धांतिक पक्ष मदद नही करता।	-	-
३.	प्रस्तुत पाठ्यक्रम के कई आशय घटक अनावश्यक है।	२	१० %
४.	परीक्षा में पास होने के लिए निर्धारित अंको की तुलना में पाठ्यक्रम ज्यादा लगता है।	२	२० %
५.	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति तथा छात्र अध्यापन कार्य से सैद्धांतिक घटकों का ज्ञान किस तरह संबंधित है, इसके बारे में मार्गदर्शन नही मिलता।	-	-
६.	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का अध्ययन छात्रशिक्षक सिर्फ परीक्षा के लिए करते है। प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य से उसका कोई संबंध नही है।	१	१० %

विधान क्र. १ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह बहुत ही कम प्रतिसाद है। इससे समझ में आता है कि, पाठ्यक्रम के प्रति कई अध्यापक की वृति चिकित्सात्मक नही है।

विधान क्र. ३ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। व्यक्तिगत अडचनों की वजह से, व्यक्तिगत दृष्टि से हो सकता, पाठ्यक्रम घटकों के प्रति प्रतिकूल दृष्टिकोन बना हो। अत: इन्हे पाठ्यक्रम संबंधित उद्‌बोधना की आवश्यकता है।

विधान क्र. ४ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। पाठ्यक्रम के कई सैद्धांतिक घटक प्रात्यक्षिकाभिमुख है। पाठ्यक्रम का परीक्षा के लिए भारांकन देखने से पता चलता है कि, पाठ्यक्रम योग्य है। अत: हर अध्यापक को इसका अध्ययन करना चाहिए एवं बाद में मत प्रकट करना चाहिए था।

विधान क्र. ६ को १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्‌वारा यह कहना गलत न होगा कि, अध्यापक स्वयं के उचित मार्गदर्शन के अभाव से गलत दृष्टिकोन से वे छात्रशिक्षकों को ही दायित्व मानने की गलती करते है।

विधान क्र. २, ५ को कोई प्रतिसाद नही मिला है।

प्रश्न क्र. २ के उत्तर भाग में [२:१], प्रश्नार्थ में दिये हुए पर्यायों के अलावा पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के पक्ष में कुछ लिखना है, या विधान करना है तो उसकी उपलब्धता हो इसीलिए इस प्रश्न की आयोजना की थी। इस मुक्त

प्रश्न को अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद / जबाब उन्हीं के शब्दों में निम्नांकित दिये है।

सारणी क्र. IV.२०.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद / जबाब
१.	अध्यापन करते बक्त प्रणालियाँ, साधनों का इस्तेमाल नही होता।
२.	समय सारणी में हिंदी की तासिकाएँ बहुत कम है।
३.	पाठ्यक्रम घटक कम करे।
४.	हिंदी अध्यापन बिधि की परीक्षा सौ अंक की होनी चाहिए।

उपर्युक्त पहले तीन प्रतिसाद [१, २, ३] आपस में संबंध रखते है। पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता दिखाने के संबंध में व्यक्तिगत अडचने जाहीर करनीनही चाहिए थी। समय की कमी तो सर्वश्रुत है। किन्तु अध्यापक छात्राध्यापक अपने उपलब्ध समयानुसार पाठ्यघटकों का ज्यादा अध्यापन करे, कई घटक छात्रशिक्षकों को स्व अध्ययन को दे दे तो यह समस्या न रहेगी। अध्यापक को चाहिए कि, लचीलेपन से अध्यापन नियोजन करे।

प्रतिसाद ४ के बारे में अनुसंधानकर्ता का भी यही मत है। पाठ्यक्रम में भारांकन की तुलना में देखा जाये तो हिंदी अध्यापन बिधि को उचित स्थान नही मिला है। पाठ्यक्रम के आधे से भी ज्यादा घटक प्रत्यक्ष कार्याभिमुख है।

अत: उन्हें घटाना ठीक नहीं होगा। बल्कि यह विषय सौ अंको के लिए रखना चाहिए।

प्रश्न क्र. ३ : " प्रस्तुत पाठ्यक्रम उपयुक्त बनाने हेतु किन सुधारों का सुझाव आप देंगे ?" यह था। यह प्रश्न पूछने का उद्देश्य पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के पक्ष में अनुभवपूर्ण सुझावों की उपलब्धता करना था। यह प्रश्न भी मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न को ६० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद उन्ही के शब्दों में निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV.२०.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	पाठ्यक्रम घटक कम करे।
२.	हिंदी अध्यापक की पेपर १०० अंक के लिए रखे।
३.	पाठ्यघटकों का अध्यापन स्वयं अध्ययन के लिए, बातालाप के लिए कैसे रखे, इस संबंध में मार्गदर्शन मिलना चाहिए।
४.	पाठ्यक्रम घटकों की भाषिक त्रुटियाँ कम करे। संकल्पना, गठन, रचना के अध्यापन के संबंध में उद्बोधन की कार्यशालाएँ हो।

उपर्युक्त पहले दो प्रतिसाद विवेचन प्र.क्र. १ में दिया है, उसका पुनर्विवेचन जरूरी नहीं।

क्र. ३ का प्रतिसाद के बारे में कहा जाता है कि, अध्यापक स्व मत से समय का लचीलापन देखकर स्वयं अध्ययन के लिए, चर्चा पद्धति के लिए पाठ्यघटक छात्रशिक्षकों को दे। इस संबंध में शिक्षाशास्त्र विभाग के सभी प्राध्यापक मार्गदर्शन देते है।

विधान क्र. ४ के प्रतिसाद में यह कहना गलत न होगा कि, पाठ्यक्रम के घटकों की भाषिक त्रुटियाँ अगर है, तो विषयज्ञान का अधिकार होने से अध्यापक इस संबंध में स्वयं मार्गदर्शन कर सकता है। संकल्पना, गठन, रचना के अध्यापन के संबंध में अपने हिंदी भाषा प्राध्यापक गुरु से मार्गदर्शन लेना उचित ही होगा। शिक्षाशास्त्र विभाग में इनके संदर्भ में मार्गदर्शन मिलता भी है। तथा इस संदर्भ में शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा एक उद्बोधन पर कार्यशाला बार्शी में हो चुकी है। उसमें भाग लेनेवाले अध्यापकों से मार्गदर्शन पा सकते है।

प्रश्न क्र. ४ : " पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों की सफलता सैद्धांतिक घटकों द्वारा क्या पर्याप्त स्वरूप से होती है ?" यह था। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उत्तर " हाँ / नहीं " दो ही पर्यायों देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्य सैद्धांतिक घटकों द्वारा सफल होते है या नही, इसकी जाँच करना था। इस प्रश्न को अध्यापको ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित प्रकार से है।

<u>सारणी क्र. IV. २१</u>

अनुक्रम	प्रतिसाद	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	९	९० %
२.	नहीं	१	१० %

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, "हाँ" के पक्ष में ९० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "नही" के पक्ष में १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "हाँ" के पक्ष में प्राप्त प्रतिसाद "नही" के पक्ष से ज्यादा है। अत: पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों की सफलता सैद्धांतिक घटकों द्वारा पर्याप्त स्वरूप से होती है, ऐसा कहा जा सकता है।

प्रश्न क्र. ४ के उत्तरविभाग में ४.१ में प्रश्न का उद्देश्य, उद्देशों की सफलता कितने हदतक होती है, इसकी जाँच पडताल करना था। इसलिए किसी एक पर्याय से सहमत होने पर उस पर्याय पर [✓] यह चिन्ह अंकित करने के लिए कहा गया था। अध्यापकों ने पर्यायों को दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : २२

पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की सफलता सैद्धांतिक घटकों द्वारा

कितने हदतक...

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक	-	-
२.	अधिक	८	८० %
३.	यथा तथा	१	१० %
४.	अल्प स्वरूप	१	१० %
५.	अत्यल्प स्वरूप	-	-

उपर्युक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि, "अत्यधिक" के पक्ष में एक भी मत नही । [अधिक" के पक्ष में ८० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "यथा तथा" के पक्ष में १० % प्रतिसाद मिला है। "अल्प स्वरूप" के पक्ष में १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "अत्यल्प स्वरूप" के पक्ष में एक भी मत नहीं है।

इस सारणी के ज्यादा प्रतिसाद " पाठ्यक्रम की उद्देश्यों की सफलता पाठ्यघटकों द्वारा होती है " के पक्ष में जाते है। तथा इसका प्रमाण " अधिक स्वरूप " से के पक्ष में मत है, जो तुलना में ज्यादा है। अत: यह कहा जा सकता है कि, पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों की सफलता सैद्धांतिक घटकों द्वारा अधिक स्वरूप से होती है।

प्रश्न क्र. ५ : " अगर आप के में पाठ्यक्रम के उद्देश्य असफल होते है, तो निम्नांकित पर्यायों में से जिनसे आप सहमत हो, उसके आगे [ ] यह चिन्ह अंकित कीजिए " यह प्रश्न था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणीमें दिया है।

सारणी क्र. IV : २१.

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	छात्रशिक्षक में उपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए प्रस्तुत सैद्धांतिक पाठ्यक्रम अपर्याप्त है।	-	-
२.	छात्रशिक्षक परीक्षा में ज्यादा अंक प्राप्त करने के लिए ही पाठ्यक्रम का अध्ययन करते है।	२	२० %

सारणी क्र. IV. : २५. [आगे शुरू..]

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद	प्रतिशत
३.	सैद्धांतिक भाग के अध्ययन का उपयोग प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य में छात्रशिक्षक नहीं करते।	२	२० %
४.	नीजी अध्यापन में सैद्धांतिक भाग का उपयोग कैसे करे, इस का कोई मार्गदर्शन या दिशा नहीं दिखाई देती।	२	२० %
५.	प्रस्तुत पाठ्यक्रम में, इस मूल्यांकन प्रणाली का अभाव है कि, एक विशिष्ट घटक से विशेष उद्देश्य सफल होता है, इस तरह का तौलनिक मूल्यांकन कैसे करे।	२	२० %
६.	उद्देश्य सफल भी होते है, तो ठोस परिमाणों का अभाव है।		

उपर्युक्त सारणी में विधान क्र. २ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह सच है कि, छात्रों को परीक्षा में ज्यादा अंक पाने के लिए अध्ययन करना आवश्यक है, इससे छात्रशिक्षकों की अध्ययन वृत्ति जाहीर होती है।

विधान क्र. ३ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। छात्रशिक्षकों की यह वृत्ति बदलने के प्रयास अध्यापक को करना चाहिए। सैद्धांतिक पाठ्य-

क्रम एवं प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य में, उसका उपयोग के बारे में मार्गदर्शन देना अध्यापक की जिम्मेदारी है।

विधान क्र. ४ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह प्रतिसाद क्र. ३ से भी संबंध रखता है। इसके बारे में अध्यापक को स्व अध्ययन, चिकित्सात्मक विचार, चिंतन करने से तथा अनुभवयुक्त अध्यापकों से विचार विमर्श करना चाहिए।

विधान क्र. ५ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है एवं क्र. ६ के विधान को १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। दोनों के बारे में यह कहना गलत न होगा कि, उद्देश्यों की सफलता का मूल्यांकन करने के लिए प्रत्येक घटक के अध्यापन के बाद एक घटक कसौटी बनाएँ, जो मौखिक या लिखित स्वरूप में ली जाये, उसमें वस्तुनिष्ठ, लघुत्तरी प्रश्न की आयोजना करे।

प्रश्न क्र. ५ के उत्तर विभाग में [५:१] में भाग प्रथम में दिये हुए पर्यायों के अलावा पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्योंकी असफलता के पक्ष में कोई विधान करता है, तो करे इसीलिए इस मुक्त प्रश्न की आयोजना की थी। इस मुक्त प्रश्न को २ अध्यापकों ने जो प्रतिसाद दिया है, उन्ही के शब्दों मे निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV. : २३.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	सैद्धांतिक भाग का उपयोग प्रत्यक्ष अध्यापन में कैसे करे, इसके प्रात्यक्षिक नही होते।

सारणी क्र. १९. : २३.अ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	प्रतिसाद
२.	छात्रों की भाषिक, लेखन, व्याकरण की क्षमताएँ कम होती है, छात्रशिक्षक परीक्षाभिमुख होते है।

प्रतिसाद क्र. १ के बारें में यह कहना गलत न होगा कि, सैद्धांतिक पाठ्यक्रम का उपयोग प्रत्यक्ष कार्य में कैसे करे, इसके मार्गदर्शन के साथ नमुना पाठ छात्रों से लिखवा जाये। स्वयं एक नमुना पाठ दिखाये।

प्रतिसाद क्र. २ के बारें में सोच बिचार से यह निर्णय लेना होगा कि, बी.एड. के प्रशिक्षण को प्रवेश देते समय " भाषिक क्षमता कसौटी एवं अभिवृति कसौटी " देकर उचित छात्रों को प्रवेश देने के संबंध बिचार करना है नहीं, आवश्यक बन गया है।

प्रश्न क्र. ६ : " प्रस्तुत पाठ्यक्रम के उद्देश्य सफल होने के लिए आप के मत से अन्य कौन से आशयघटकों का समावेश पाठ्यक्रम में किया जा सकता है ?" यह था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। यह प्रश्न पूछने का उद्देश्य पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों की सफलता ज्यादा मात्रा में होने हेतु अन्य आशय घटकों की उपलब्धता करना था। इसे सिर्फ २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। जो अध्यापकों की भाषा में निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV. : २३.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	भाषिक क्षमताएँ बढाने के लिए पाठ्यघटक रखे जाये।
२.	मुहावरे, कहावते, लोकोक्तियाँ एवं उनके संदर्भ सहित स्पष्टीकरण पर पाठ्यघटक हो।

उपर्युक्त दोनों प्रतिसाद हिंदी भाषा का आशयज्ञान बढानें में मदद करते है। हिंदी अध्यापन पद्धति को " दूसरी अध्यापन पद्धति को चुननेवाले छात्रशिक्षकों के लिए ऐसे घटक होना जरूरी है। इससे भाषिक क्षमताएँ विकसित होने की संभावना जरूर है। अत: इसका विचार होना चाहिए।

प्रश्न क्र. ७ : " हिंदी अध्यापक को कुशल एवं क्षमतापूर्ण बनाने हेतु क्या सैद्धांतिक पाठ्यक्रम एवं उसकी कार्यनीति में परिवर्तन लाना आवश्यक है ?" यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। यह प्रश्न पूछने का हेतु यह था कि, सैद्धांतिक पाठ्यक्रम एवं कार्यनीति के संदर्भ में क्या परिवर्तन लाना आवश्यक है ? इसकी आजमाईश करना था। हिंदी अध्यापन विधि के सैद्धांतिक पाठ्यक्रम में एवं कार्यनीति में परिवर्तन लाना आवश्यक है / नहीं इस प्रकार का अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित प्रकार से है।

सारणी क्र. IV : २४

पाठ्यक्रम एवं कार्यनीति में परिवर्तन की आवश्यकता

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	हाँ	९	९० %
२.	नहीं	१	१० %

उपर्युक्त सारणी से यह पता चलता है कि, पाठ्यक्रम एवं कार्यनीति के पक्ष में ९० % प्रतिशत लोग है, तथा अपरिवर्तन के पक्ष में १० % प्रतिशत लोग है। अतः पाठ्यक्रम में एवं कार्यनीति में परिवर्तन लाना आवश्यक है।

प्रश्न क्र. ७.१ में " अगर आप के मत में "हाँ" आवश्यक है, तो निम्नांकित में से जिस मत से आप सहमत है, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए " इस प्रकार की सूचना देकर मुक्त प्रतिसाद की उपलब्धता करने हेतु प्रश्न पुछा गया था। इस प्रश्न को अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित प्रकार से है।

सारणी क्र. IV : २५

अनुक्रम	विधान	संख्या	प्रतिशत
१.	कई घटकों का अध्यापन सैद्धांतिक पद्धति के साथ प्रत्यक्ष कार्य का अवलंब करते हुए होना चाहिए।	७	७० %

सारणी क्र. IV : २५ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	विधान	संख्या	प्रतिशत
२.	सैद्धांतिक भाग का अध्यापन अपनी पद्धति से करने की स्वतंत्रता हर अध्यापक को हो।	३	३० %
३.	यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों के लिये परीक्षा में अंक प्राप्ति की तुलना में ज्यादा मात्रा में है। अत: इसको घटाना चाहिए।	४	४० %
४.	कई घटकों का अध्यापन न करते हुए उन पर सिर्फ " निबंध लेखन कार्यशाला " का आयोजन हो।	३	३० %
५.	" निबंध लेखन के घटक " विश्वविद्यालय " द्वारा निर्धारित किये जाये एवं उनपर परीक्षा में प्रश्न न पूछे जाये।	२	२० %

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह पता चलता है कि, विधान क्र. १ को ७० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। पाठ्यक्रम के कई घटक प्रात्यक्षिक कार्याभिमुख है। उनका अध्यापन तो प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित ही है। बाकी के पाठ्यघटक स्वयं अध्ययन के लिए एवं घटक क्र. ८ के सब नमुने पाठ बनवाकर भी किया जा सकता है।

विधान क्र २ को प्रतिसाद में ३० % प्रतिशत मत मिले है। इस प्रकार के लचीलेपन से आप सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की कार्यनीति कर सकते है।

विधान क्र. ३ को ४० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। पाठ्यक्रम के ज्यादा घटक ५० % प्रतिशत से भी ज्यादा प्रात्यक्षिक कार्याभिमुख है। भारांकन के परिप्रेक्ष्य में उचित स्थान हिंदी को दिया गया है, अत: इसे घटाकर कोई खास फायदा तो नहीं हो सकता, इससे पाठ्यक्रम दुर्बल हो जायेगा। अध्यापकों को इसके लिए पाठ्यक्रम के निर्मिती तत्वों से सजग होना चाहिए एवं इसपर चिंतन करना चाहिए।

विधान क्र. ४ को ३० % प्रतिशत प्रतिसाद मिले है। यह वाकई ठीक ही है कि, कई घटकों को स्व अध्ययन के लिए देकर उनपर निबंध लेखन कार्यशाला आयोजना उपलब्ध समय में ली जाये।

विधान क्र. ५ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। निबंध लेखन के घटक अध्यापक को स्वयं समय की नजाकत को समझते हुए चुनने चाहिए। यह अध्ययन, अध्यापन का तणाव कम करने के लिए ठीक है। किन्तु उस पर प्रश्न न पूछे जाये तो इससे छात्रशिक्षकों में अध्यापक महाविद्यालयों में " कॉपी राईट " होंगे। तथा स्वयं अध्ययन एवं निबंध चर्चा लेखन का " शोध अध्ययन " का उद्देश्य सफल नहीं हो सकेगा।

प्रश्न क्र. ७.२ में जो अध्यापक परिवर्तन के पक्ष में है, उनसे परिवर्तन के लिए सुझाव लिखने के लिए कहा था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इसे प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रस्तुत सुझाव उन्हीं के शब्दों में निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : २५.अ

अनुक्रम	सुझाव
१.	सैद्धांतिक भाग को घटाकर वही समय प्रात्यक्षिक कार्य का अवसर

सारणी क्र. IV : २५.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	सुझाव
	देने में, छात्रों को मिलना चाहिए।
२.	हिंदी अध्यापन के नयी तरीके, अध्यापन करना एवं आधुनिक शैक्षणिक साहित्य निर्माण करने के बारे में कृतिसत्र का आयोजना की जाये।
३.	आशय विश्लेषण घटक के संबंध में प्रयोग करना, निबंध लेखन, चर्चा होनी चाहिए। किन्तु इस पर परीक्षा में प्रश्न न पूछे जाये।

विधान क्र. १ के संदर्भ में यह कहना उचित है कि, पहले से ही सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के अध्यापन के लिए कम तासिकाएँ मिलती है। उसे प्रत्यक्ष कार्य में दिया जाये तो कठिनाईयाँ तो होगी। पाठ्यक्रम घटाने से वह दुर्बल होगा।

क्र. २ का प्रतिसाद सर्वथा उचित लगता है। अध्यापन साधन निर्माण के बारे में तथा विविध अध्यापन पद्धतियों द्वारा अध्यापन का कृतिसत्र जरूरी है।

क्र. ३ का प्रतिसाद के बारे में अनुसंधानकर्ति सहमती नहीं दिखाती है। क्योंकि इससे आशय विश्लेषण घटक एवं आशययुक्त अध्यापन कार्यशाला

के उद्देश्य सफल न होंगे। " कॉपी राईट " बनाकर अहवाल देने के अनुचित वृति को बढावा मिलेगा।

४.४.२ : प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित प्रश्नों का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

अध्यापक आत्म साक्षात्कार प्रश्नसूची का " ब विभाग " प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति से संबंधित था। इस विभाग का प्रथम प्रश्न क्र. ८ से शुरू होता है। जिसमें " प्रचलित हिंदी पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यक्ष कार्य, एक सफल एवं कुशल अध्यापक बनने हेतु, आप के मत से कितने हदतक उपयुक्त है ? पूछा गया था। इसका हेतु अर्थात प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता की जाँच पडताल करना था। यह प्रश्न बंदिस्त स्वरुप का था। इस पाँच श्रेणीयुक्त पर्याय दिये गये थे।

१] अत्यधिक उपयुक्त

२] उपयुक्त

३] यथा तथा

४] अल्प स्वरुप

५] अत्यल्प स्वरुप

इन्ही में से किसी एक पर्याय से सहमत होने से उस पर्याय पर अध्यापक ने [✓] यह चिन्ह अंकित करना था। अध्यापकों ने पर्यायों का दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : २६

हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम के प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक उपयुक्त	-	-
२.	उपयुक्त	८	८० %
३.	यथा तथा	१	१० %
४.	अल्प स्वरूप	१	१० %
५.	अत्यल्प स्वरूप	-	-

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की "उपयुक्त" के पक्ष में ८० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। "यथा तथा" के पक्ष में सिर्फ १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है, तो "अल्प स्वरूप" के पक्ष में १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अत: तुलनात्मक नजर से देखें तो पाठ्यक्रम के प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता के पक्ष में ज्यादा मत है। अत: यकीनन यह कहा जा सकता है कि, प्रचलित हिंदी अध्यापन विधि के पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता सफल अध्यापक बनने में है।

प्रश्न क्र. ९ : " अगर आप के मत में इस पाठ्यक्रम का प्रत्यक्ष कार्य अनुपयुक्त है, तो उसके पक्ष में नीचे विधान दिये गये है। इन विधानों में से जिन

से आप सहमत हो, उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए " यह था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। यह प्रश्न पूँछने का उद्देश्य था कि, प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के पक्ष में अध्यापकों से स्वानुभवपूर्ण मतों की उपलब्धता करना तथा मुक्त प्रतिसाद देने के लिए विचार को दिशा दिलाना। अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया गया है।

सारणी क्र. IV : २७

अनुक्रम	विधान	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता, नीजी अध्यापन कार्य में नहीं होती।	–	–
२.	प्रत्यक्ष कार्य में जिन घटक की आपुर्ति होती है, उनसे छात्रों को प्रत्यक्ष अध्यापन करते समय कोई मदद नहीं मिलती।	–	
३.	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति एवं परिपूर्ति सिर्फ एक संस्कार स्वरूप होने से उसका आचरण छात्रशिक्षक नहीं करते ।	४	४० %
४.	पाठ्यक्रम का आवश्यक भाग मानकर मात्र उसे अध्यापक महाविद्यालय में पूर्ण किया जाता है।	३	३० %
५.	प्रत्यक्ष कार्यद्वारा आत्मसात ज्ञान को नीजि अध्यापन में कैसे लाया जाये, इसके बारे में कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता।	४	४० %

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, विधान क्र. १ व २ दोनों को कोई प्रतिसाद नहीं मिला है।

विधान क्र. ३ को ४० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्वारा अध्यापक अपनी एक धारणा प्रकट करते है। हो सकता है, यह अनुभव भी हो, किन्तु इसका दोष सिर्फ छात्रशिक्षकों को देने से वे अपनी जिम्मेदारी नही टाल सकते। छात्रों को दोष देते वक्त प्रत्यक्ष कार्य यह गुट कार्य होता है एवं गुटकार्य का नेता, मार्गदर्शक स्वयं अध्यापक होता है। अतः कार्यशाला की कार्यनीति अधिक सक्षमता से परिपूर्णता से वह कर सकता है।

विधान क्र. ४ को ३० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्वारा स्वयं अध्यापक इस ओर निर्देश करते है कि, अध्यापक महाविद्यालय में प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति को नजर अंदाज करना व ऐसे तैसे संपन्न करना ही चलना है। इससे न पाठ्यक्रम के प्रत्यक्ष कार्य के उद्देश्य सफल होते है, न छात्रों को अपनी क्षमताएँ विकसित करने में मदद मिलती होगी। ऐसे महाविद्यालयों में हिंदी अध्यापक की जिम्मेदारियाँ और बढती है।

विधान क्र. ५ को ४० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इस प्रतिसाद द्वारा यह पता चलता है कि, प्रत्यक्ष कार्य द्वारा अर्जित ज्ञान व कौशलों का नीजि अध्यापन में कैसे लायें, इनका ज्ञान स्वयं अध्यापक के पास नहीं है। लेकिन इसके लिए अनुभवपूर्ण अध्यापकों से मार्गदर्शन ले या शिक्षा-शास्त्र विभाग के अध्यापकों से मार्गदर्शन पा सकते है।

उपर्युक्त तीनों प्रतिसादों का निर्देश पाठ्यक्रम की अनुचित कार्यनीति एवं अध्यापकों की कम क्षमता होने पर है। इससे पाठ्यक्रम का दोष नहीं है। लेकिन कार्यनीति कार्यान्वित करनेवाले अध्यापक क्षमतापूर्ण होने चाहिए।

प्रश्न क्र. ९ के उत्तरभाग में [९:१], भाग १ में [प्र. क्र. ९] में, प्रत्यक्ष कार्य के अनुपयुक्तता के पक्ष में अध्यापकों को कुछ लिखना हो या सुझाव देना हो तो उसकी उपलब्धता हो। इसलिए इस प्रश्न की आयोजना की थी। इस मुक्त प्रश्न को अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद उन्हीं के शब्दों में अंकित किया गया है।

सारणी क्र. IV : २७.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्य द्वारा अर्जित ज्ञान व कौशलों का उपयोग नीजि अध्यापन में कैसे करें, इस संबंध में अध्यापक महाविद्यालय के प्रिन्सीपल से मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।
२.	प्रत्यक्ष कार्य के उद्देश्यों की स्पष्टता, कार्यनीति की स्पष्टता करना चाहिए। प्रत्यक्ष कार्य द्वारा छात्रों में अपेक्षित परिवर्तन, लाभ के बारें में मूल्यमापन की पद्धति नहीं है।
३.	तज्ञों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति संबंध में मार्गदर्शन की व्यवस्था नहीं है।

विधान क्र. १ व ३ मुक्त प्रतिसादों को देखते हुए यह लगता है कि, अध्यापकों का प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति, उसमें अर्जित ज्ञान कौशलों को आचरण लाने के संबंध में उद्बोधन की आवश्यकता है।

विधान क्र. २ का प्रतिसाद देखने से लगता है कि, बाकई छात्रों के परिवर्तन, कौशल, क्षमता के बारें में मापन करनेवाली मूल्यमापन पद्धतिका विकास होना चाहिए।

प्रश्न क्र. १० : " प्रत्यक्ष कार्य की आयोजना सिर्फ अच्छी हो यह काफी नहीं बल्कि उस की कार्यनीति भी अच्छी होनी चाहिए। आज जिस पद्धति से प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति होती है, उससे भी अधिक अच्छे ढंग से क्या उसे कार्यान्वित किया जा सकता है ?" इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, प्रचलित " प्रत्यक्ष कार्यनीति अनुसरण " के पक्ष में कितने अध्यापक है, इसकी जाँच करना। साथ ही प्रचलित प्रत्यक्ष कार्यनीति की परिवर्तना के पक्ष में कितने अध्यापक है, यह जानना था। इस प्रश्न को दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : २८

अनुक्रम	प्रतिसाद	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	९	९० %
२.	नहीं	१	१० %

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति के पक्ष में परिवर्तन लाने के लिए "हाँ" कहनेवाले प्रतिसाद ९० % प्रतिशत है। तथा "नहीं" के पक्ष में सिर्फ १० % प्रतिशत प्रतिसाद मात्र है।

इससे यह अनुभव लगा सकते है कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति में अच्छे ढंग के लिए परिवर्तन होने चाहिए।

प्रश्न क्र. १० के उत्तर विभाग में [१०.१] में यह पूछा गया था कि, " प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति का कार्यान्वितिकरण क्या अलग तरह से हो सकता है ? अगर होता हो तो कृपया उसके बारें में सूचनाएँ दीजिए।" इस प्रश्न का हेतु, अध्यापकों से उनके स्वानुभवपूर्ण अलग कार्यनीति के बारें मे सुझावों की उपलब्धता करना था। यह सूचनाएँ -

अ] सूक्ष्माध्यापन - प्रत्यक्ष कार्य
ब] आशययुक्त - अध्यापन कार्य
क] आशय - अभ्यास पाठ [सराव पाठ]
ड] मूल्यांकन पद्धति - कृतिसंग कार्य से संबंधित थी

इन चारों प्रत्यक्ष कार्य से संबंधित अध्यापकों द्वारा ४० % प्रतिशत प्रतिसाद स्वरूप दी गई सूचनाएँ निम्नांकित सारणी में दी है।

अनुक्रम	सूचनाएँ
अ.१	सूक्ष्माध्यापन कार्यशाला में हर कौशल के २ चक्र की पुनरावृति करे।

अनुक्रम	सूचनाएँ
	इससे छात्रों को अभ्यास करने का अवसर मिलेगा।
अ–२	समय बढ़ाना चाहिए।
अ–३	कौशल्यों के एकात्मीकरण के पाठ बढ़ा देना चाहिए एवं इसमें विविध कौशल्य घटकों का एकात्मीकरण कैसे किया, किस उद्देश्य को लेकर किया आदि संबंध में सूक्ष्माध्यापन अहवाल में छात्रशिक्षकों को निबंध लिखना बाध्य करें।
ब–१	आशययुक्त अध्यापन कार्यशाला के लिए समय बढ़ाईए।
ब–२	आशययुक्त अध्यापन कार्यशाला के व्याख्यान एवं मार्गदर्शन के लिए शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त तज्ञों को भेजने का नियोजन हो।
ब–३	अर्जित ज्ञान, कौशलों एवं छात्रशिक्षकों में परिवर्तन का मूल्यमापन करने की पद्धति विकसित होना आवश्यक है।
क–१	आशय अभ्यास [सराव] पाठ के लिए खास तासिकाओं का नियोजन आवश्यक है।
क–२	मूल्यांकन की प्रक्रिया में परिवर्तन करना आवश्यक है। मूल्यांकन करते वक्त हर कौशल, वर्तनों का आशय पाठ का आदि के संबंध में श्रेणी द्वारा मूल्यांकन हो।

अनुक्रम	सूचनाएँ
क-३	जिस अध्यापक ने पाठ के लिए मार्गदर्शन किया हो, वही पाठ का मूल्यांकन करे, अन्य नहीं।
ड-१	मूल्यांकन कृतिसत्र के लिए तज्ञ अध्यापकों का व्याख्यान दिये जाये।
ड-२	मूल्यांकन कृतिसत्र के दौरान प्राप्त ज्ञान से, कौशल से साप्ताहिक पाठशाला में एक कक्षा का वार्षिक नियोजन घटक चाचणी आदि का उपयोजन करने के लिए छात्रशिक्षकों को बाध्य करना चाहिए। शालेय अनुभव व सलग सराव पाठ के गुणों में ही इस उपयोजनात्मक घटक चाचणी का मूल्यमापन आवश्यक माना जाना चाहिए।

उपर्युक्त सूचनाओं को प्रकरण पाँच में सिफारिशों के तौर पर तथा सूचनाओं के स्वरूप में स्थान दिया गया है।

प्रश्न क्र. ११ : " प्रत्यक्ष कार्यद्वारा हिंदी पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों की सफलता क्या पर्याप्त स्वरूप से होती है ?" यह प्रश्न पूछा गया था। जिसका जवाब उन्हें " हाँ / नहीं " दो पर्यायों से एक पक्ष में देना था। इस प्रश्न का हेतु था, पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों की सफलता क्या प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य की कार्यान्वितिकरण में होती है या नहीं, इसकी जाँच पड़ताल करना। यह आजमाना कि, उद्देश्यों की सफलता के प्रति अध्यापक जागृत है या नहीं। यह प्रश्न बद्ध स्वरूप का है। इस प्रश्न को अध्यापकों ने

दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित है।

तारणी क्र. IV : २९

अनुक्रम	प्रतिसाद	संख्या	प्रतिशत
१.	हाँ	६	६० %
२.	नहीं	४	४० %

उपर्युक्त तारणी को देखने से पता चलता है कि, उद्देश्य सफलता में पाठ्यक्रम की पर्याप्तता है के पक्ष में ६० % प्रतिशत प्रतिसाद है, तो "पर्याप्तता नहीं" के पक्ष में ४० % प्रतिशत प्रतिसाद है। इससे तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो उद्देश्यों की सफलता पर्याप्त स्वरूप में होती है।

प्रश्न क्र. ११ के उत्तर विभाग में ११.१ " अगर आप के मत में सफलता होती हो तो कितने हदतक होती है ?" पूछा गया था। इस का उद्देश्य, उद्देश्यों की सफलता प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य की कार्यान्वितिकरण से सद्यस्थिति में कितने हदतक होती है, इसकी जाँच पडताल करना था। यह प्रश्न भी बद्ध स्वरूप का था और उत्तरों की उपलब्धता के लिए इसे पाँच पर्याय दिये थे।

१] अत्यधिक स्वरूप से

२] अधिक स्वरूप से

३] यथा तथा

४] अल्प स्वरूप से

५] अत्यल्प स्वरूप से

इन पाँच पर्यायों में से किसी एक पर्याय से अध्यापक को सहमति जवाब में दिखानी थी तथा उसके उपर [✓] यह चिन्ह अंकित करना था। अध्यापकों ने दिया हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ३०

पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की सफलता प्रत्यक्ष कार्य द्वारा कितने हदतक

अनुक्रम	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
१.	अत्यधिक स्वरूप से	-	-
२.	अधिक स्वरूप से	८	८० %
३.	यथा तथा	१	१० %
४.	अल्प स्वरूप से	१	१० %
५.	अत्यल्प स्वरूप से	-	-

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, उद्देश्यों की सफलता "अधिक स्वरूप से" होता है के पक्ष में सबसे ज्यादा ८० % प्रतिशत प्रतिसाद है तो "यथा तथा" के पक्ष में १० % प्रतिशत प्रतिसाद एवं " अल्प

स्वरूप" के पक्ष में १० % प्रतिशत प्रतिसाद मिले है।

अत: तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों की सफलता होने पाठ्यक्रम अधिक स्वरूप से पर्याप्त है, यही अनुमान निकाला जा सकता है।

प्रश्न क्रं. १२ : " अगर आप के मत में प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति द्वारा उद्देश्य असफल होते हो तो उनके कौन से कारण हो सकते है ? [निम्नांकित कारणों में से जिस कारण से आप सहमत हो उसके आगे [✓] यह चिन्ह अंकित कीजिए]" यह प्रश्न संमिश्र स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य, अध्यापकों से पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की असफलता के कारणों की जाँच पडताल करनी थी। साथ ही उद्देश्य असफलता के कारण ढूँढने की मानसिक तैयारी करना था जिसका उपयोग उन्हें इस प्रश्न के उत्तर भाग में [१२.१] मुक्त प्रतिसाद देने में हो। अध्यापकों ने दिया प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ३१

अनुक्रम	विधान	संख्या	प्रतिशत
१.	प्रत्यक्ष कार्य की पूर्ति करने में समय, जगह एवं साधनों का अभाव है।	३	३० %
२.	छात्रशिक्षक अपेक्षित परिवर्तन नहीं दिखा सकते क्योंकि उनमें क्षमताओं का अभाव होता है।	३	३० %

सारणी क्र. IV : ३१ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	विधान	संख्या	प्रतिशत
३.	छात्रशिक्षक पाठ्यक्रम का आवश्यक भाग मानकर उसे पूर्ण करते है। आचरण में लाने का प्रयास नहीं करते।	३	३० %
४.	यद्यपि अध्यापन एक कला है, अतः इतनी मात्रा में प्रत्यक्ष कार्य की जरूरी नहीं।	-	-
५.	उद्देश्यों का निर्धारण एवं प्रत्यक्ष कार्य की योजना का परस्परावलंबित्व दिखाई नहीं देता।	४	४० %
६.	प्रत्यक्ष कार्य की आवृति के बाद प्रशिक्षणार्थियों में अपेक्षित परिवर्तन तथा उसके संदर्भ में उद्देश्यों की सफलता, इसकी मूल्यांकन पद्धति [प्रणाली] का अभाव है।	२	२० %

उपर्युक्त सारणी को देखने से यह पता चलता है कि, विधान क्र. १ को ३० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशालाओं का समय बढाने के संबंध में विचार होना आवश्यक है। एवं जगह साधनों के संबंध में शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा परीक्षण समिती की आवश्यकता है।

विधान क्र. २ को ३० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। अत: छात्र-शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के लिए पात्रता क्षमताओं का मूल्यमापन कर ही बी.एड. प्रशिक्षण के लिए प्रवेश देना चाहिए।

विधान क्र. ३ को ३० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इसके लिए भी उपर्युक्त अन्वयार्थ योग्य ठहरता है। प्रस्तुत प्रतिसाद के संदर्भ में अध्यापक द्वारा योग्य मार्गदर्शन मिलना चाहिए।

विधान क्र. ४ को कोई प्रतिसाद नहीं मिला है।

विधान क्र. ५ को ४० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इससे जाहीर होता है कि, प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति की योजना में त्रुटियाँ है। इसीसे उद्देश्यों की सफलता तथा प्रत्यक्ष कार्य की योजना का परस्परावलंबित समझने के लिए अध्यापक को स्वयं प्रयास करना चाहिए। इसका उद्बोधन भी होना जरूरी है।

विधान क्र. ६ को २० % प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रात्यक्षिक कार्य के दौरान छात्रशिक्षकों में आनेवाली क्षमताओंका परिवर्तन तथा उद्देश्यों की सफलता के संबंध मे मूल्यांकन प्रणाली तथा एक कसौटी को विकसित करना आवश्यक है।

प्रश्न क्र. १२ के उत्तरभाग [१२.१] में प्रत्यक्ष कार्यद्वारा उद्देश्यों की असफलता के बारें में अध्यापकों को मुक्त प्रतिसाद में मत देने के लिए कहा था। तीन अध्यापकों के ये प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिये है।

सारणी क्र. IV : ३१.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्यक्ष कार्य के उद्देश्यों का छात्रशिक्षकों का मूल्यांकन पदनिश्चयन श्रेणी द्वारा करने का अभाव है।
२.	छात्रशिक्षकों में किन क्षमताओं का वर्तनी का परिवर्तन अपेक्षित है, इसके संबंध में मार्गदर्शन, नियोजन, मूल्यांकन का अभाव है।
३.	प्रत्यक्ष कार्य के अर्जित ज्ञान को प्रयोग में लाने की आवश्यकता, अभिवृत्ति, विकास का अभाव नियोजन व कार्यनीति में होता है।

उपर्युक्त सूचनाओं के संदर्भ में प्रकरण पाँच में सुझाव दिये गये है।

उपर्युक्त प्रतिसादों से अनुसंधानकर्ति सहमत है।

प्रश्न क्र. १३ : " हिंदी अध्यापन विधि " पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों को आत्मसात करने की दृष्टि से प्रचलित प्रत्यक्ष कार्य पर्याप्त बनाने हेतु आप के मत से अन्य कौन से प्रत्यक्ष कार्य को समावेशित किया जा सकता है ? यह प्रश्न था। यह मुक्त प्रश्न था। उद्देश्यों को संपूर्णतः संपन्न होने हेतु क्या है तो उसे कार्यान्वित कैसे करें आदि के संबंध में अध्यापकों से सूचनाएँ उपलब्ध कराना, इस प्रश्न का उद्देश्य था। इस प्रश्न को प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV.३१.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	अध्यापन साधनों को तैयार करने का प्रत्यक्ष कार्य आवश्यक किया जाये।
२.	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के कई घटक के संबंध में स्वयं अध्ययन पुस्तिका लिखने का प्रत्यक्ष कार्य आवश्यक रूप से लिया जाये।
३.	छात्रों द्वारा " अध्यापक मूल्यांकन " का एक प्रत्यक्ष कार्य कार्यशाला आवश्यक करे। जिसमें अध्यापक की क्षमताएँ, भाषिक व विषयज्ञान की क्षमताएँ के संबंध में मूल्यांकन के लिए आशय घटक की रचना की जाये। ५ - ६ दिन का यह प्रत्यक्ष कार्य रखा जाये।
४.	हिंदी विषय क्र भाषण, लेखन पर प्रभुता पाने के लिए प्रत्यक्ष कार्य रखे जाये।
५.	व्याकरण अध्ययन व अध्यापन तथा कक्षानुसार उसका अध्यापन व उपयोजन के संदर्भ में कोई प्रत्यक्ष कार्य रखे।

उपर्युक्त सूचनाएँ प्रकरण पाँच के अंतर्गत पाठ्यक्रम की उपयुक्तता बढाने हेतु सुझावों के स्वरूप में दी है।

प्रश्न क्र. १४ : " इस अनुसंधान के विषय की दृष्टि से अन्य महत्वपूर्ण पहलू भी हो सकते है, जिनका विवेचन उपर्युक्त प्रश्न सूची में न आया हो , परंतु प्रस्तुत अनुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो। इस बारें में नीचे संक्षिप्त

में सुझाव स्वरूप कुछ लिखना चाहे तो लिखिए "। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। कुल प्रतिसाद प्रतिशत मिला है।

इस प्रश्न द्वारा प्राप्त सुझावों, सूचनाओं को प्रकरण क्र. ५ में स्थान देने का प्रयास किया गया है। इन सुझावों को मद्देनजर रखकर निष्कर्ष भी निकाले गये है, जो प्रकरण पाँच में दिये गये है।

४.५ : माध्यमिक हिंदी अध्यापक के लिए प्रश्नावली का विश्लेषण तथा अर्थान्वयन :-

प्रस्तुत प्रश्नावली देने के लिए प्रचलित हिंदी अध्यापन विधि [१९९२-९३] का पाठ्यक्रम संपन्न करके हिंदी विषय का अध्यापक के रूप में सेवारत माध्यमिक हिंदी विषयाध्यापकों से, जो उपलब्ध हुए उनसे संपर्क किया था।

सेवा में कार्यरत माध्यमिक हिंदी अध्यापक के लिए एक प्रश्नावली बनाई थी। यह प्रश्नावली कईयों को मेल द्वारा भेजी थी,, तो कईयों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करके पूर्ति की गयी है। चूँकि, यह अध्यापक जान पहचान के थे तथा अनुसंधानकर्ता के छात्राध्यापिर्थि रह चुके है। करीब आठ माध्यमिक हिंदी अध्यापकोंने इस प्रश्नावली की पूर्ति की है। इनके बारें में सामान्य जानकारी परिशिष्ट "क" में दी गई है।

माध्यमिक हिंदी अध्यापक के लिए रचित प्रश्नावली में कुल ११ प्रश्न थे। प्रश्नावली द्वारा प्राप्त सामग्री का प्रश्नक्रम विश्लेषण एवं अर्थान्वयन

निम्नांकित है।

प्रश्न क्र. १ : " आप के नीजि विषयाध्यापन में आप ने अध्यापक महाविद्यालय में जिस हिंदी पाठ्यक्रम का अध्ययन किया था, क्या उसकी उपयुक्तता होती है ?" प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर हिंदी अध्यापकों को " हाँ / नहीं " पर्याय से किसी एक से सहमति दर्शाते हुए करना था। यह बद्ध स्वरूप का प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य हिंदी के प्रत्यक्ष नीजि अध्यापनमें पाठ्यक्रम की उपयुक्तता है या नहीं इसकी जाँच करना था। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त हुआ प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ३२

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	हाँ	८	-
२.	नहीं	-	-

उपर्युक्त सारणी में नीजि अध्यापन में पाठ्यक्रम की उपयुक्तता है के पक्ष में सभी मत गये है। अतः पाठ्यक्रम की उपयुक्तता है, यही जाहीर है।

प्रश्न क्र. २ : " यदि हाँ तो किसप्रकार से ?" यह प्रश्न उपर्युक्त प्रश्न क्र. १ का ही उत्तरभाग था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि, यदि पाठ्यक्रम उपयुक्त है, तो सैद्धांतिक एवं प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता कैसे होती है,

यह जान लेना था। इससे पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की सफलता का चित्र भी देखा जा सकता था। यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था।

इस प्रश्न के २.१ में सैद्धांतिक पाठ्यक्रम घटकों की उपयुक्तता नीजि अध्यापन में कैसे होती है ? इसके बारे में प्रतिसाद देना था। प्रश्न के २.२ में प्रत्यक्ष कार्य के घटकों की उपयुक्तता नीजि अध्यापन में कैसे होती है ? इसके बारें में प्रतिसाद था। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसादों से समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : ३२.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	घटक क्र. २ की उपयुक्तता इसलिए होती है क्योंकि, पाठ पढ़ाते वक्त उसके उद्देश्य के बारे में नियोजन करना आसान होता आया है।
२.	घटक क्र. ७ द्वारा सभी पाठ्यक्रम का नियोजन करना आया है, इसलिए उपयुक्त लगता है।
३.	घटक क्र. ८ बहुत ही उपयुक्त ठहरा है, इससे में पाठ्यपुस्तकों के सभी पाठ अच्छी तरह से पढ़ा सकती हूँ।
४.	परीक्षा का नियोजन एवं प्रशासन करने मेंघटक क्र. ९ द्वारा बहुत मदद मिली है।

सारणी क्र. IV : ३२.अ [आगे शुरू..]

अनुक्रम	प्रतिसाद
५.	हिंदी के निम्न कक्षाओं को पढ़ानेके लिए घटक ६.ब, ८ का मै ने जो अध्ययन किया उससे बहुत ही मदद मिल रही है।
६.	घटक ४.इ, ५.ब, ६.अ द्वारा जो अध्ययन किया, उसका उपयोग द्वारा मैं अपने पाठ ज्यादा से ज्यादा अच्छी तरह से लेने में सफल हो रहा हूँ।
७.	सूक्ष्माध्यापन कार्यक्रम में जो कौशल सीखे थे, उनका उपयोग पाठ्य-अध्यापन के लिए बहुत मात्रा में होता है।
८.	आशययुक्त अध्यापन कृतिसत्र द्वारा प्राप्त ज्ञान, कौशलों का उपयोग नीजि अध्यापन होता है। विविध पाठों की रचना कराने में उद्देश्य व्यवस्थापन करना एवं उसे संपन्न करने में मदद मिलती है।
९.	सूक्ष्माध्यापन में प्राप्त कौशलों पर प्रभुता के कारण, अध्यापन करते वक्त तणाव नहीं आता। सहजता से पाठ लेते है।

उपर्युक्त प्रतिसादों को देखने से यह पता चलता है कि, पाठ्यक्रम की उपयुक्तता निश्चित रूप से है।

प्रश्न क्र. ३ : " अगर आप के मत से बी.एड. पाठ्यक्रम की उपयुक्तता नीजि अध्यापन में नही होती तो कैसे नहीं होती ? इस संबंध में

कारण दीजिए -" इस प्रश्न के ३.१ व ३.२ में सैद्धांतिक व प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के संबंध में अध्यापकों को मुक्त प्रतिसाद देने थे। इस प्रश्नको प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। यह मुक्त प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य पाठ्य-क्रम की अनुपयुक्तता के संबंध में कारण ढूंढना था। इस प्रश्न को प्राप्त प्रतिसादों में से मान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : ३२ ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	घटक क्र. ५ हिंदी शिक्षाकी प्रणालियों का उपयोग करके हिंदी नहीं पढा सकते। इसलिए बी.एड. में पठित इस घटक का कोई उपयोग नहीं हो पाता।
२.	
२.	घटक क्र. ६,ब अध्यापन साधनों को उपयोग में नहीं ला सकते क्योंकि, पाठशाला में इसकी उपलब्धता नहीं है तथा इसे तैयार करने का प्रैक्टीकल ज्ञान नहीं है। वैसे यह शैक्षणिक साहित्य महँगा भी है।
३.	घटक क्र. १० का उपयोग पाठाध्यापन में नहीं है, यह जरूरी भी नहीं है।

उपर्युक्त प्रतिसाद सिर्फ सैद्धांतिक पाठ्यक्रम से संबंधित है। प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के संदर्भ में कोई प्रतिसाद नहीं है। उपर्युक्त तीनो प्रतिसाद

व्यक्तिगत दृष्टि से दिये गये है। पाठ्यक्रम के निर्मिति तत्त्वानुसार इनका स्थान पाठ्यक्रम में नियोजित है।

प्रश्न क्र. ४ : " माध्यमिक पाठशाला में निर्धारित हिंदी भाषा - ध्यापन के उद्देश्यों की परिपूर्ति कराने में तथा उनकी जानकारी दिलाने में प्रचलित बी.एड. का हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम कितने हदतक उपयुक्त है ?" यह बद्ध स्वरूप का प्रश्न था। इस प्रश्न का उद्देश्य माध्यमिक पाठशाला में हिंदी अध्यापन के उद्देश्यों की परिपूर्ति कराने में पाठ्यक्रम कितने हदतक उपयुक्त है, इसको जानना था। इस प्रश्न का उत्तर पाँच पर्यायों में से किसी एक से सहमति देकर करना था। इस प्रश्न का प्राप्त प्रतिसाद निम्न सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ३३

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	अत्यधिक उपयुक्त	–	–
२.	उपयुक्त	७	८७.५ %
३.	यथा तथा	१	१२.५ %
४.	अल्प स्वरूप	–	–
५.	अत्यल्प स्वरूप	–	–

उपर्युक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि, "उपयुक्त" के पक्ष में ८७.५ % प्रतिशत मत मिले है। "यथा तथा" के पक्ष में १२.५ % प्रतिशत मत है।

अत: उपयुक्तता के पक्ष में ज्यादा प्रतिसाद है, तो नैसर्गिकत: पाठ्यक्रम की उपयुक्तता है।

प्रश्न क्र. ४.१ व ४.२ दोनों प्रश्न क्र. ४ के ही उत्तरभाग मात्र है। इनमें पाठ्यक्रम के संबंध में प्र. क्र.४ में निर्देशित हेतु के संबंध को लेकर उपयुक्तता तथा अनुपयुक्तता के संदर्भ में मुक्त प्रतिसाद देने थे। इस प्रश्न को ५० प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इनमें से समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : ३३.अ

अनुक्रम	उपयुक्तता के संबंध में प्रतिसाद
१.	इनमें से गद्य घटकों की उपयुक्तता अध्यापन करते वक्त होती है।
२.	पाठाध्यापन करते समय आशय की संरचना समझ लेने में मदद मिलती आई है।
३.	आशय विश्लेषण अच्छी तरह संरचित कर पाठ लिया तो उद्देश्य सफल में होने में मदद मिलती है। यह कौशाल्य प्राप्त करने में गद्य पाठ्यक्रम की एवं कार्यशाला की उपयुक्तता हुई है।
४.	पाठाध्यापन के कौशलों को प्रभुता पाने में मदद मिली है, तथा आशय का कक्षानुसार काठिण्य स्तर का आकलन होने में विशेष दिशा मिली है।

अनुक्रम	अनुपयुक्तता के संबंध में प्रतिसाद
१.	हिंदी भाषा के विविध अंगों का अध्यापन कैसे करे, इस विषय में पाठ्यक्रम में हमने सैद्धांतिक जानकारी तो ली ही, किन्तु उनपर पाठ लेना का अभ्यास लेने की उपलब्धि पाठ्यक्रम में नही है। उदा. - व्याकरण अध्यापन नाट्य प्रवेश का अध्यापन इ. के बारे में अभ्यास नहीं दिया गया था। इसलिए अडचने आती है।
२.	विविध शैक्षिक साधनों को कैसे बनाये, इसका भी प्रत्यक्ष कार्य ज्ञान न मिलने से बना नहीं पाते। इससे छात्रों को हम शैक्षिक अनुभवों से बंचित रखते है, ऐसा हमेशा लगता है।

उपर्युक्त प्रतिसादों के संबंध में सूचनाएँ प्रकरण क्र. ५ में दी गयी है।

प्रश्न क्र. ६ : " हिंदी विषय से संबंधित जो कार्यशालाएँ आपने संपन्न की उनकी मदद नीजि अध्यापन में कैसे होती है ? इस बारे में अपने विचार रिक्त स्थान में लिखिए -" यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। प्रस्तुत प्रश्न का उद्देश्य था कि, नीजि अध्यापन में कार्यशालाओं में संपन्न ज्ञान, कौशलों का योगदान कैसे है, इसके बारें में जानकारी लेना था। इस प्रश्न को १०० प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। प्रस्तुत प्रश्न में तीन कार्यशालाओं से संबंधित प्रतिसाद मिले है। समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिये है।

सारणी क्र. IV : ३३.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद

१. <u>सूक्ष्माध्यापन कार्यशाला</u> :-

पाठाध्यापन के कौशलों पर प्रभुता प्राप्त करने में मदद मिली है। अत: पाठ लेने का तनाव नहीं आता।

पाठाध्यापन दरम्यान शिक्षक विद्यार्थी संबंध कैसे हो, इसका अर्थात आंतरक्रिया संबंधि विचार करने में मदद मिलती है।

प्रत्येक पाठ का नियोजन करने में मदद मिलती है।

२. <u>आशययुक्त अध्यापन कार्यशाला</u> :-

विविध पाठों का अध्यापन करते समय आशय का विश्लेषण कक्षानुसार कैसे करे, इसके बारे में दिशा मिलती है।

संकल्पना तथा आशय विस्तार का स्पष्टीकरण कैसे करें, द इस संबंध में मदद मिल रही है।

सामान्यीकरण द्वारा जीवन के उपदेश, मूल्य, तत्व की प्रतिष्ठापना कैसे करे, इस बारें में विचार करनेमें मदद मिल रही है।

एक ही आशय को विविध पाठ प्रकार में कैसा रचा जाये इसकी बारें में मदद मिल रही है।

३. <u>मूल्यांकन कृतिसत्र / कार्यशाला</u> :-

प्रत्येक कक्षा का वार्षिक नियोजन करने में मदद मिल रही है।

संपूर्ण पाठ्यपुस्तक के घटकों का नियोजन, करना वह भी प्राप्त समयानुसार कैसे करें, इसके बारे में मदद मिल रही है।

सारणी क्र. IV : ३३.ब [आगे शुरू...]

अनुक्रम	प्रतिसाद
	घटक चाचणी का नियोजन, प्रशासन व मूल्यांकन में इस कार्यशाला की बहुत मदद मिल रही है।

उपर्युक्त प्रतिसादों से यहाँपर यकीनन कहा जा सकता है कि, बी.एड. में संपन्न कार्यशालाओं द्वारा ज्ञान, कौशलों की मदद नीजि अध्यापन में होती है।

प्रश्न क्र. ७ : " प्रचलित हिंदी अध्यापन विधि पाठ्यक्रम जिसका आपने अध्ययन किया, क्या वह आपको एक सफल, कुशल हिंदी भाषाध्यापक बना सका है ?" प्रस्तुत प्रश्न बद्ध था। इसका उत्तर "हाँ / नहीं" पर्यायों में से एक पर्याय से सहमति दर्शाते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य था कि, सफल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम का योगदान है या नहीं, इसकी जानकारी लेना। इस प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : ३४

कुशल / सफल हिंदी भाषाध्यापक बननें में पाठ्यक्रम का योगदान

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	हाँ	८	१००
२.	नहीं	-	-

उपर्युक्त सारणी के आधारपर हम यह कह सकते है कि, "हाँ" के पक्ष में १०० प्रतिशत मत है। तथा "नहीं" के पक्ष में एक भी मत नहीं है। अत: यकीनन कहा जा सकता है कि, कुशल अध्यापक बनने में प्रचलित पाठ्यक्रम का योगदान निश्चित स्वरुप से है।

प्रश्न क्र. ८ : " अगर आप एक कुशाल, सफल भाषाध्यापक बने है, तो उस में पाठ्यक्रम को योगदान कैसे है ? इस बारें में अपने मत दीजिए -" यह प्रश्न का मुक्त स्वरुप का था। इस प्रश्न उद्देश्य पाठ्यक्रम का सफल अध्यापक बनने में योगदान कैसा है, यह जानना था। इस प्रश्न को ५० प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। समान आशयवाले प्रतिसाद छाँटकर निम्नांकित सारणी में दिये है।

सारणी क्र. IV : ३४.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	हिंदी भाषा के पाठाध्यापन के उद्देश्य, राष्ट्रभाषा के उद्देश्य समझाये जाने में योगदान है।
२.	अध्यापक की भूमिका का प्रशिक्षण दिलाने में योगदान है।
३.	अध्यापक को अध्यापन क्षमताएँ दिलाने में पाठ्यक्रम योगदान देता है।
४.	अध्यापक के सभी कार्य समझाए देने में मदद करता है।

इन प्रतिसादों के बारें में प्रकरण ५ में विस्तृत स्पष्टीकरण दिया है।

प्रश्न क्र. ९ : " अगर प्रचलित पाठ्यक्रम कुशल एवं सफल अध्यापक बनाने में असफल ठहरता है, तो कैसे ? इसके कारण दीजिए।" यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। प्रस्तुत प्रश्न द्वारा प्रतिसादों से पाठ्यक्रम की कमजोरियाँ जानने का उद्देश्य था। इस प्रश्न के प्रतिसाद में सिर्फ ३७.५ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। जो वही शब्दों में निम्नांकित है।

सारणी क्र. IV : ३४.ब

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	प्रत्येक हिंदी भाषाध्यापन के अंग पर अध्यापन अभ्यास पाठ देने की उपलब्धि पाठ्यक्रम में नहीं है। अत: १८ पाठों से ज्यादा पाठ रखे।
२.	कई पाठ्यक्रम घटक अनुपयुक्त है, क्योंकि सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान ही मिलता है, उनका प्रत्यक्ष कार्य कौशलों की उपलब्धि देनी चाहिए।
३.	व्याकरण, अध्यापन, शुद्ध लेखन प्रत्यक्ष कार्य आदि भाषाभिमुख विषयज्ञान के घटक होने चाहिए। इसका ही तो हमें अध्यापक व्यवसाय में ज्यादा उपयोग होता है।

उपर्युक्त कारणों संबंधि में विवेचन एवं सूचनाएँ प्रकरण ५ में दी गयी है।

प्रश्न क्र. १० : " प्रचलित पाठ्यक्रम में, क्या आप के मत से परिवर्तन लाना आवश्यक है ?" था। प्रस्तुत प्रश्न बद्ध स्वरूप का था। इस प्रश्न का उत्तर "हाँ / नहीं " से सहमति दर्शाते हुए देना था। इस प्रश्न का उद्देश्य था कि, पाठ्यक्रम का परिवर्तन करना, है या नहीं, इस संबंध में मत आजमाना। प्रस्तुत प्रश्न को प्राप्त प्रतिसाद निम्नांकित सारणी में दिया है।

सारणी क्र. IV : ३५

पाठ्यक्रम परिवर्तन संबंध में प्रतिसाद

अनुक्रम	पर्याय	प्रतिसाद	प्रतिशत
१.	हाँ	२	२५
२.	नहीं	६	७५

उपर्युक्त सारणी को देखने से पता चलता है कि, पाठ्यक्रम के परिवर्तन के पक्ष में २५ प्रतिशत प्रतिसाद है, तो पाठ्यक्रम में परिवर्तन नही करना चाहिए के पक्ष में ७५ प्रतिशत प्रतिसाद है। बहुत ही अल्प मत पाठ्यक्रम परिवर्तन के लिए प्रतिसाद है। इनमें परिवर्तन कौन से आवश्यक है ? यह जानने के लिए प्रश्न क्र. ११ की रचना की थी।

प्रश्न क्र. ११ : " अगर आप के मत से परिवर्तन लाना आवश्यक है, तो कौन से परिवर्तन लाने चाहिए, इस बारें में अपनी सूचनाएँ दीजिए -" यह प्रश्न मुक्त स्वरूप का था। इस प्रश्न का उद्देश्य यह था कि पाठ्यक्रम के

परिवर्तन के लिए अध्यापकों की अपेक्षाएँ जानना तथा सूचनाएँ प्राप्त करना था। इस प्रश्न को २५ प्रतिशत प्रतिसाद मिला है। इनमें से समान आशयवाले प्रतिसाद निम्नांकित दिये गये है।

सारणी क्र. IV : ३५.अ

अनुक्रम	प्रतिसाद
१.	पाठ्यक्रम के कम उपयुक्त पाठ्यघटकों को हटाकर भाषा विषयज्ञान से संबंधित पाठ्यघटकों की रचना कीजिए।
२.	पाठ्यक्रम बहुत भारी है, अतः उसके कुछ घटकों पर परीक्षा में प्रश्न नहीं पूछना चाहिए।
३.	प्रत्यक्ष कार्य कृतिसत्रों में जिन घटकों का अध्ययन होता ही है, उन्हें फिरसे परीक्षा की तैयारी के लिए न रखा जाये।
४.	अध्यापन साधनों संबंधित एक प्रत्यक्ष कार्य कृतिसत्र हो।
५.	विषयाध्यापन में प्रभुता लाने के लिए पाठों की संख्या [सराव पाठ] ज्यादा की जाये।
६.	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यशाला का समय बढा दीजिए। इससे अभ्यास हो कर प्रभुता पाने के लिए मदद मिलेगी।

उपर्युक्त प्रतिसादों के संबंध में प्रकरण ५ में सूचनाएँ दी गयी है।

४.६ समारोप :-

प्रस्तुत प्रकरण में अनुसंधान कार्य के लिए प्रश्नावलियों द्वारा संपादित सामग्री का विश्लेषण एवं अन्वयार्थ लगाया है। विश्लेषण एवं अन्वयार्थ के लिए सारणियों द्वारा वर्गीकरण का उपयोग किया गया है तथा प्रतिशत [परसेंटेज] के माध्यम से मूल्यांकन करके अन्वयार्थ लगाया गया है।

इसी अन्वयार्थ के आधार पर अनुसंधान के निष्कर्ष तथा सिफारिशें प्रकरण पाँच में दिये गये है।